शब्द रंजन

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 2 | अंक 3 | उदयपुर बुधवार 15 फरवरी 2017 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

लोक सबसे बड़ा, शास्त्र से भी और चमत्कारी भी

-डॉ. मंगत बादल-

लोक का सामना बड़े-बड़े नहीं कर सके। राजा राम यह भलीभांति जानते थे, वे अग्नि परीक्षा भी ले चुके थे कि सीता पवित्र है किन्तु लोक के अपवाद का सामना नहीं कर सके और सीता को वनवास देना पड़ा। उसी सीता को आगे जाकर लोक ने सती कहकर सम्मान दिया जो आज भी पूजी जा रही है। महात्मा गांधी भी बेरिस्टर बन दक्षिण अफ्रीका गये और वहां बसे भारतीयों की स्थिति देख उनका दिल रो पड़ा तब उन्होंने सत्याग्रह आंदोलन छेड़ दिया। यदि वे भी अन्य वकीलों की तरह कमाने की होड़ में लग जाते तो कौन उन्हें महात्मा कहता! असली लोकनायक वही होता है जिसे लोक की धड़कन की पहचान हो और जो लोक के दुखदर्द का सहभागी बनता हो। मगरमच्छी आंसू बहाने वालों तथा गर्ज पड़ने पर गधे को बाप कहने वालों को लोक भलीप्रकार पहचानता है।

लोक और शास्त्र का जहां आपसी विवाद होता है वहां लोक की बात माननी चाहिये। इसका एक अर्थ यह हुआ कि लोक शास्त्र से बड़ा है कारण कि कोई भी सिद्धांत पहले लोक की कसौटी पर कसा जाता है फिर लागू होता है। आगे चलकर वही परिपाटी बन जाता है जिसे लोक मानता है। लोक सबसे ऊंची सत्ता है। वह जिसे चाहे मारे या छोड़े। लोक कभी गलत नहीं होता। उसकी छलनी इतनी महीन कि उससे कोई बच नहीं निकलता। लोक जैसी चक्की में से कोई साबूत नहीं निकल सकता।

लोक का सामना बड़े-बड़े नहीं कर सके। राजा राम यह भलीभांति जानते थे, वे अग्नि परीक्षा भी ले चुके थे कि सीता पवित्र है किन्तु लोक के अपवाद का सामना नहीं कर सके और सीता को वनवास देना पड़ा। उसी सीता को आगे जाकर लोक ने सती कहकर सम्मान दिया जो आज भी पूजी जा रही है। कहने का तात्पर्य यह है कि लोक जब किसी को अपनी आंच में तपाता है तो सोने को भी कुंदन बना देता है। उसमें तनिक भी खोट नहीं रह पाती है अन्यथा हिरणाकश्यप तो स्वयं को भगवान कहता था। प्रजा भी डर के मारे उसका लोहा मानती किन्तु लोक में वह राक्षस ही कहा गया।

लोक जिसको भी मान्यता देता है, पहले अच्छी तरह ठोक-बजाकर देखता है। उसके पास परख करने वाली हजार आंखें होती हैं। उससे कोई बच नहीं सकता। विभीषण का उदाहरण लें। सीता को लेकर उसने रावण को गलत राय नहीं दी। सच्चा भाई और मित्र वही होता है जो सदैव हित की बात कहता है, चाहे वह सुनने में भले ही अठीक लगती हो। विभीषण ने रावण को, सीता को सम्मान के साथ भेजने को कहा। इस पर रावण ने भरे दरबार में विभीषण को लात मार घर से निकाल दिया। वह राम की शरण में गया तो राम ने उसे लंकापति कह सम्मान दिया किन्तु लोक ने भगवान राम की भी नहीं मानी और 'घर का भेदी लंका ढावै' कह गद्दार ही माना।

लोक चमत्कारों को पसंद करता है। राम से लेकर जितने भी धार्मिक महापुरूष हुए उनके साथ न जाने कितने चमत्कार जुड़ गये। कवि कल्पना की सृष्टि कर अपने चमत्कारों से जो रस-सृष्टि करता है, लोक उसे सच मान लेता है। वेद, पुराण, महाभारत आदि जितने भी धार्मिक काव्य-ग्रंथ हैं, लोक उन्हें इतिहास सम्मत स्वीकारता है।

जटायु गिद्ध, हनुमान, सुग्रीव, बाली बंदर थे। जामवंत रींछ था। गरुड़ पक्षी था किन्तु उन्होंने मनुष्य सा व्यवहार किया। लोक ने इनको मानवेतर पात्र के रूप में यूं-का-यूं स्वीकार उन्हें देवत्व प्रदान किया किन्तु उनसे कोई सीख नहीं ली। काव्य में इन अति मानवीय पात्रों को लोक ने यथार्थ रूप में स्वीकार किया जबकि असल में तो ये वनवासी थे। मनोविज्ञान की दृष्टि से देखें तो यह क्षतिपूर्ति का सिद्धांत है कि असल जीवन में जिसकी पूर्ति नहीं हो सकती, लोक, साहित्य तथा कल्पना लोक में उसे देख आनंद की अनुभूति करता है।

सफलता का कोई मार्ग छोटा नहीं होता। उसे प्राप्त करने के लिए पूरी मेहनत, निष्ठा और ईमानदारी की जरूरत है। साहित्य के क्षेत्र में आज लोग कई तरह के हथकंडे अपनाकर पुरस्कारों की जोड़तोड़ करते देखे जाते हैं किन्तु लोक में वे स्वीकार्य नहीं हैं इसलिए कौन उन्हें याद रखता है।

लोक के मर्म तक पहुंचने के लिए कठिन साधना करनी पड़ती है। राम यदि अपने पिता का कहना नहीं मान वन में जाकर वनवासियों का दुखदर्द नहीं जानते तो अयोध्या के मामूली राजा होते लकिन वन में ऋषि-मुनियों की हड्डियों का ढेर देख लोगों से जाना कि वे रावण से कितने आतंकित हैं तब उसे मारने की सौगंध खाई। सूर्पणखां के नाक काटने और सीता के हरण की घटना तो बाद की है।

महात्मा गांधी भी बेरिस्टर बन दक्षिण अफ्रीका गये और वहां बसे भारतीयों की स्थिति देख उनका दिल रो पड़ा तब उन्होंने सत्याग्रह आंदोलन छेड़ दिया। यदि वे भी अन्य वकीलों की तरह कमाने की होड़ में लग जाते तो कौन उन्हें महात्मा कहता!

आजादी के लिए कितने लोगों ने त्याग किया, लोक सबको जानता है। छोटी सी उम्र में भगतसिंह ने असेंबली में बम फैंक जो कारनामा दिखाया, दूसरे नहीं दिखा सके। उसे फांसी अंग्रेजों ने नहीं दी। खुद ने ही मौत गले लगाई क्योंकि वह जानता था कि लोगों के दिलों में आजादी की लौ जगाई जानी जरूरी है। दूसरा कोई रास्ता नहीं है। असली लोकनायक वही होता है जिसे लोक की धड़कन की पहचान हो और जो लोक के दुखदर्द का सहभागी बनता हो। मगरमच्छी आंसू बहाने वालों तथा गर्ज पड़ने पर गधे को बाप कहने वालों को लोक भलीप्रकार पहचानता है।

सच है कि कई बार लोक के मापदंड समझ में नहीं आते। अहिल्या, तारा, मंदोदरी, कुंती, द्रोपदी ये पांचों कन्याओं में गिनी जाती हैं जबकि इनके संबंध एक से अधिक मनुष्यों से रहे। लोक में सदन कसाई और पिंगला वैश्या भी इज्जत पाती है। दरअसल लोकचित्त में जो न्याय की तुला है वह इतना पूरा तोलती है कि कभी भी गलती की गुंजाइश नहीं रहती।

युद्ध में पीठ दिखा भागने वाला घृणा की दृष्टि से देखा जाता है। श्रीकृष्ण युद्ध करते-करते जरासंध के आगे भाग जाते हैं तब भी लोक उन्हें रणछोड़ कह सम्मान देता है।

लोक मानता है कि ऐसा भागना, भागना नहीं होता। वह युद्ध की एक नीति है। इसी तरह कृष्ण ने मक्खन की चोरी की तो उन्हें माखनचोर नाम से प्रसिद्धि मिली। लोक नीयत को पहचानता है। श्रीकृष्ण ने अपने ऊपर जुल्म ढहाने वालों को मथुरा जाकर मक्खन खिलाया। इस पर लोग नाराज हुए पर मरता क्या न करता! झूठ बोलना बुरा है पर यदि उस झूठ से किसी के प्राण बचे रहते हैं तो वह झूठ सौ सत्यों के बराबर है।

महाभारत के युद्ध में इससे भी उल्टा हुआ। युद्ध में युधिष्ठिर ने 'अश्वत्थामा हत: नरो वा कुंजरो वा' कहलाकर आधा झूठ बुलवा दिया। फिर भी लोक में युधिष्ठिर धर्मराज के नाम से प्रसिद्ध है।

लोक इस मर्म को भलीभांति समझता है कि बुराई को खत्म करने के लिए कभी-कभी शुद्ध साधन काम नहीं करते। इसलिए 'शढे शाठ्येन समाचरेत' अर्थात् जैसे के साथ तैसा का मंत्र भी लोक ही ने सिद्ध किया है। कहने का तात्पर्य यही है कि लोकचित्त बड़ा उदार है किंतु लोकमंगल की स्थापना के खातिर उसे यदि निर्मम भी होना पड़ता है तो वह किसी से समझौता नहीं करता।

कभी-कभी लगता है कि लोक चेतना सुस्त पड़ी हुई है। समाज में अनाचार, भ्रष्टाचार बढ़ रहा है पर सभी दिन एक जैसे नहीं होते। अंगारों पर राख पड़ने से उनकी चमकदमक फीकी पड़ जाती है पर हवा का झोंका उसी राख को उड़ाकर उनकी दमक बढ़ा देता है। इसके लिए इन्तजार करनी पड़ती है। जल्दबाजी में फूंक काम नहीं करती। फूंख से राख तो उड़ जायेगी पर वह फूंकिये के मुंह पर गिर कर एक नया खतरा दे देगी।

नवीन प्रकाशन

जब तक आप स्वयं इस पुस्तक को नहीं पढ़ेंगे तब तक 'कहानी का करिश्मा' और मोलेला की मिट्टी का मतलब आपकी समझ में नहीं आयेगा। पुस्तक की पाठकीयता को कहानी ने गुदगुदाया है। एक स्मित, एक मुस्कराहट चेहरे पर लाइये और मोलेला की मिट्टी को माथे पर लगाइये। शायद आपके ललाट के लेख सुगंधित हो जायें।

-बालकवि बैरागी

मोलेला और वहां की माटी की बनी मूरतों के साथ भी कहानी की रसज्ञता के पीछे यही भाव-ताव है। मेरी प्रसन्नता तो यह है कि मैंने मोलेला की मूर्तियों के शून्य से लेकर शिखर होते काल को देखा है। मूर्तियां बनाने वालों की चौथी-पांचवीं पीढ़ी को भी देख पा रहा हूं। मुझे अपनी पीढ़ियों से अधिक उनकी पीढ़ियां याद हैं और उन लोगों की सूची भी कम बड़ी नहीं है जिन्होंने मोलेला जाकर बड़ी गहराई से अध्ययन किया और वहां की मूर्तियों को अपने साथ विदेशी धरती पर ले जाकर प्रतिष्ठामूलक संतोष पाया। यह पुस्तक कहानी के साथ मेरी तरंग यात्रा और उसकी अन्तरंग यात्रा का दरसाव है।

-डॉ. महेन्द्र भानावत

पुस्तक आर्यावर्त संस्कृति संस्थान, नई दिल्ली से प्रकाशित 250 मूल्य की है।

स्मृतियों के शिखर (26) : डॉ. महेन्द्र भानावत

नृत्यकार उदयशंकर और उनके सहयोगी

नृत्य कला के बेजोड़ साधक उदयशंकर झीलों की नगरी उदयपुर की देन हैं। दिसम्बर 1900 में पीछोला के किनारे स्थित गड्.या देवरा के पास की पांडुवाड़ी बस्ती में उनका जन्म हुआ। उनके पिता श्यामाशंकर उदयपुर महाराणा भूपालसिंह के दरबारी थे। माता हेमांगनादेवी भी गायन वादन तथा नर्तन कला में विशेष अभिरुचि लिए थी। श्यामाशंकर ने लगभग बीस वर्ष तक महाराणा की सेवा की। वे यहां मिडिल स्कूल के हेडमास्टर थे परन्तु अपनी योग्यता एवं प्रभावी व्यक्तित्व से महाराणा के निजी सचिव बन गये। उदयपुर में जन्म लेने के कारण ही श्यामाशंकर ने अपने पुत्र का नाम उदयशंकर रखा।

झालावाड़ नरेश भवानीसिंह महाराणा के निमंत्रण पर उदयपुर आये तब वे श्यामाशंकर की अगुवाई में महाराणा के शाही आतिथ्य से बड़े प्रभावित हुए फलस्वरूप उन्होंने महाराणा के समक्ष श्यामाशंकर को झालावाड़ लेजाने का प्रस्ताव रखा। इस प्रस्ताव को स्वीकार करने पर श्यामाशंकर अपने परिवार सहित झालावाड़ चले गये तब उदयशंकर मात्र डेढ़ वर्ष के थे।

सन् 1940 में महाराणा भूपालसिंह के निमंत्रण पर उदयशंकर अपने कलादल के साथ उदयपुर आये और राजमहलों के दरबार हाल में कार्तिकेय एवं राधाकृष्ण नामक नृत्यों की प्रस्तुति दी जिसके साक्षी देवीलाल सामर भी बने जिन्होंने 1952 में भारतीय लोककला मंडल की स्थापना की। सामरजी ने मुझे बताया कि मंच पर 40 वर्ष के उदयशंकर 20 वर्ष से अधिक उम्र के नहीं लग रहे थे। उनकी बड़ी पैनी आंखें, नुकीली नाक और सुडौल लचकदार शरीर सबको विमुग्ध कर गया। वे गजब के कलाकार थे। प्रदर्शनोपरांत सामरजी उदयशंकर से मिले और उनसे नृत्य सीखने की इच्छा जाहिर की। उदयशंकर ने तत्काल अल्मोड़ा में उनके संस्कृति केंद्र में आने की स्वीकृति दे दी।

सामरजी के अभिनंदन ग्रंथ 'गेह्रो फूल गुलाब रो' में मैंने इस प्रसंग में लिखा- ग्रीष्मावकाश होते ही सामरजी अल्मोड़ा पहुंचे। प्रथम दिन के अभ्यास में ही सामरजी ने अपनी कला-प्रतिभा से उदयशंकर को मोहित कर लिया। वे वहां उपस्थित 100 विद्यार्थियों में सर्वश्रेष्ठ घोषित किए गए। उदयशंकर ने सामरजी को प्रशिक्षार्थी के बजाय नृत्य शिक्षकों के साथ रख लिया और उनके लिए लोकनृत्य की विशेष कक्षा प्रारंभ कर दी। इस कक्षा में स्वयं उदयशंकर एवं अमलाशंकर नृत्य सीखने आते थे वहीं श्रीमती जोहरा सेगल, सिमकी, गांगुली, शांतिवर्धन, सचिनशंकर, देवेन्द्रशंकर तथा रवीन्द्रशंकर ने इस कक्षा का लाभ उठाया।

यही नहीं, सन् 1942 में उदयशंकर ने अपनी प्रसिद्ध फिल्म 'कल्पना' का कार्य प्रारंभ किया तब सामरजी को भी मद्रास बुला लिया। यह फिल्म वहां के जेमिनी स्टूडियो ने बनाई थी। सामरजी ने इसमें सुंदर की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इसके लिए अभिनय की शिक्षा सुप्रसिद्ध अभिनेता पार्श्वनाथ अलंटेकर ने दी। सुंदर के रोल के अतिरिक्त संवाद-लेखन का महत्वपूर्ण काम भी हुआ। इसके लिए अमृतलाल नागर और फिर सुमित्रानंदन पंत बुलाए गए परन्तु समयाभाव से दोनों यह कार्य नहीं कर सके तब सामरजी ने पूरी फिल्म के गीत-संवाद का पुनर्लेखन किया। वहां से लौटने पर सामरजी उदयशंकर की नृत्यकला के प्रभाव को भूल नहीं पाये और उन पर यह रंग ऐसा चढ़ा कि उन्होंने तराना नामक नृत्य नाटिका की रचना की जिसमें स्वयं सामरजी ने मुख्य भूमिका का रोल अदा किया। लोगों ने जब सामरजी का वह अभिनय देखा तो सहज ही लगा कि जैसे उदयशंकर स्वयं ही उनके अभिनय में उतर आए हैं।

सन् 1944 में बम्बई के तेरह सिनेमागृहों में एक साथ कल्पना फिल्म के प्रदर्शन हुए किंतु दुर्भाग्य यह रहा कि यह बुरी तरह फ्लाप हुई जबकि कला की दृष्टि से यह फिल्म अत्यंत ही उच्च स्तर की थी जो रूस में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय फिल्म प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कृत हुई।

यह वह समय था जब शिष्ट समाज में नाचना अत्यंत बुरा समझा जाता था। उदयशंकर उसके बुरी तरह शिकार हुए। उन पर पत्थर फैंके गए। धूल मिट्टी उछाली गई परन्तु उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। ऐसी ही स्थिति सामरजी की भी हुई। ओसवाल जैन होते हुए भी नाथद्वारा के श्रीनाथ मंदिर में उन्हें प्रवेश करने से रोक दिया गया।

उदयशंकर कभी बंधीबंधाई शैली पर नहीं चले। वे निरंतर नया कुछ करने के विश्वासी प्रयोगधर्मी कलाकार थे। उन्होंने कहा भी -''मैं उस परंपरा का आदर करता हूं जो शुद्ध है, अमिश्रित है, अछूती है और कलाकारों के अज्ञान तथा सनक के कारण विकृत नहीं हुई है। परंपरागत रूढ़ियों के सिद्धांत पुस्तकों के रूप में संग्रहालयों में रखे जाने चाहिएं जहां उनके भक्त उन्हें पीढ़ियों तक पूजते रहें।''

भारतीय ग्रामीण परिवेश और वहां के नृत्यों ने उदयशंकर को जीवन रस दिया। विश्व में अपनी नृत्यकला को बुलंदी पर पहुंचाने वाले उदयशंकर की आत्मा शुद्ध भारतीय रमणशीला थी। उनका मन और हृदय भारतीय ग्राम्यजन के साथ जीने, उल्लसित होने तथा नृत्यमग्न बने रहने का अखंड यथार्थदर्शी था। उनकी चाह के रूप में उनका यह कथन जैसे उनकी वसीयत ही बन गया- ''मुझे ग्रामीणों की भांति रहना और उनके साथ नृत्य करना प्रिय है। मेरा हृदय गांवों की ओर जाना चाहता है। मैं नाव में बैठकर विस्तृत नदी को पारकर ऐसी रमणीय एवं अनोखी भूमि पर पग रखना चाहता हूं जहां कृषकों के वृन्द आकर मेरे चारों ओर एकत्र हो जांय और मैं चांदनी रात में विस्तृत नीलाम्बर के नीचे नदी तट पर ढोलक की ताल के साथ नृत्य कर सकूं।''

उदयशंकर लकीर के फकीर कभी नहीं बने। ऐसा उनके स्वभाव में भी नहीं था। कलकत्ता में जब उन्होंने अपने नृत्यों का प्रदर्शन किया तो उनकी बड़ी आलोचना हुई। अकेले रवीन्द्रनाथ टैगोर थे जिन्होंने उनकी पीठ थपथपाई और कहा कि सबकुछ अच्छा करते हुए भी तुम्हारे नृत्यों में भारतीय संस्कृति का पुट नहीं है अत: पूरे देश का भ्रमण करो और बड़े-बड़े गुरुजनों के चरणों में बैठकर सीखो। उन्होंने यही किया।

उदयशंकर ने सर्वथा नये ढंग से अपने नृत्यों की रचना की। पदचापों की तकनीक में भी क्रांतिकारी परिवर्तन किया। उनके पास आदमकद कांच रहता जिसके सहारे वे अपनी अंग भंगिमाओं को संवारते हुए नृत्य के विविध रूपों में आबद्ध हो जाते।

भारतीय लोक कलामंडल की रजत जयंती पर उदयशंकर की स्मृति में व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता डॉ. नारायण मेनन ने की। इस अवसर पर आर.आर. दिवाकर, जगदीशचन्द्र माथुर, स्वरूप व्यास तथा कोमल कोठारी विशेष रूप से उपस्थित थे। मैं संयोजक था। डॉ. कपिला वात्स्यायन का मुख्य व्याख्यान था। उन्होंने कहा कि उदयशंकर के साथ तो उनका सम्पर्क छोटा ही रहा पर उनका कोई शिष्य ऐसा नहीं जिसके साथ उन्होंने पांच-दस वर्ष तक रियाज नहीं किया हो। शांतिवर्धन, देवेन्द्रशंकर, विष्णुदत्त शिराली, प्रभात गांगुली, उजरा, जोहरा का उल्लेख करते हुए कपिलाजी ने कहा कि जब उदयशंकर को विश्व की ख्याति मिली तो उन्हें भारतीय नृत्य के बारे में कुछ भी मालूम नहीं था पर उसके बाद उनकी दृष्टि खुली तब वे उन स्रोतों में गये जिनको हम आज ढूंढ़ते जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि उदयशंकर की देन एक ऐसी देन है जो रवीन्द्रनाथ ठाकुर की है।

यह व्याख्यान इसलिए भी महत्वपूर्ण था कि कपिलाजी ने उदयशंकर के नृत्य-रुपों को अपने भावाभिनय द्वारा मूर्तिवंत कर दिखाया और बताया कि उदयशंकर ने अपने नृत्य में ताल और संगीत की सीमा तोड़ी। शास्त्रीय शैली में संगीत की प्रधानता रहती है और नृत्य का आधार संगीत होता है न कि नृत्य पर संगीत बांधा जा सकता है। उदयशंकर ने संगीत बाद में बांधा। यही नहीं, उन्होंने साहित्य का स्वर तथा स्वर का अभिनय से जो संबंध होता है उसे भी तोड़ा। आज इसे जाननेवाले कोई नहीं हैं। दर्शक भी बहुत कम हैं। समीक्षक तो उससे भी कम हैं।

मेरा यह सौभाग्य रहा कि मैं विष्णुदत्त शिरालीजी से भी मिला। अट्ठारह नवम्बर 1981 को वे उदयपुर आये तब उनसे बड़ी देर तक मिलना हुआ। वे लोकवाद्यों पर विशेष अध्ययन कर रहे थे। राजस्थान के बहुत सारे लोकवाद्यों पर मैंने उनको जानकारी दी। मुम्बई लौटने पर उन्होंने 23 नवम्बर के पत्र में मुझे लिखा कि सन् 1948 में आर्थिक दृष्टि से कल्पना की घोर असफलता से उन्होंने उदयशंकर के दल से मुक्ति पाकर चीफ प्रोड्यूसर मोहन भवनानी के आग्रह पर फिल्म्स डिवीजन में संगीत निदेशक का पद प्राप्त किया।

वहां शिरालीजी 1962 तक रहे। उन्होंने वहां 450 डोक्युमेंट्री फिल्मों के साथ सिम्फोनी ऑफ लाइफ्स एवं सिम्फोनी ऑफ सीजन्स नामक म्युजिकल डोक्युमेंट्री तैयार की। उन्होंने सरगम नामक संगीत वाद्यों पर पुस्तक भी लिखी। उदयशंकर के नृत्य प्रदर्शन की जानकारी के बहाने उन्होंने पश्चिमी संगीत रसज्ञों के लिए सन् 1973 में भारतीय संगीत पर महत्वपूर्ण विवरणी तैयार की जो पेरिस से प्रकाशित हुई।

एक सप्ताह बाद उन्होंने मुझे एक और भावुकता से ओतप्रोत पत्र लिखा जिसमें लिखा कि -''मैंने जो कुछ बताया, लगता है संगीत के क्षेत्र में कोई असाधारण कार्य नहीं किया, कोई उपलब्धि और अनुभव भी अर्जित नहीं किया। इसके लिए यह जीवन अपर्याप्त है। संभवत: अगले जन्म में कुछ प्राप्त कर सकूं।'' सचमुच में वे बड़े विनम्र और अपने में अकिंचन ही थे।

मैं करंदीकर से भी मिला जो उदयशंकर के दल के प्रमुख वादक रहे। फरवरी 1977 में आये करंदीकर लगभग 15 दिन कलामंडल में रहे। वे कद में नाटे किंतु बड़े चुस्त और स्वस्थ मन के मौजी जीव थे। हर समय प्रसन्न चित्त रहनेवाले करंदीकर का नाम गजानन विष्णु था। उदयशंकर के साथ सन् 1941 से 51 तक रह कर उन्होंने इंग्लैंड, अमेरिका, कनाडा, चीन, फ्रांस में तबला, ढोल, नगारा, पखावज, जलतरंग, तबलातरंग, डुग्गीतरंग जैसे वाद्यों को एकसाथ बजाकर खूब वाहवाही ली।

उदयशंकर के दल में 20-25 कलाकार थे जिनमें 8 तो वादक ही थे। करंदीकर ने तबलातरंग में तेरह-तेरह तबले तक बजाये। एक ही समय में एक पांव से एक मात्रा, दूसरे से दो, एक हाथ से तीन, दूसरे हाथ से चार तथा मुंह से पांच मात्रा कर बताना उनके बायें हाथ का खेल था। उन्होंने नये-नये बोल-ताल भी तैयार किये। आड़ा तीन ताला, लघुनवान्की बनाये। दो में तीन मात्रा, तीन में चार, चार में पांच और इसी प्रकार तीन में दो, चार में तीन, पांच में चार ऐसे लय के अनेक प्रकार खोजे। कलकत्ता, मुम्बई, पूना, मद्रास तथा भारत बाहर भी उदयशंकर ने उनके एकल प्रदर्शन रखे जो बड़े प्रशंसित रहे।

करंदीकर ने बताया कि उन्होंने तबलातरंग का प्रशिक्षण नांगांव के पांडोबा लेले, इन्दुर के रहमत खां तथा अमरावती के नामदेव बोबा के शिष्य बाबा छत्रे से लिया। इंदौर के नाना साहेब पान्से के शिष्य पांडवा अठवले से पखावज एवं पांडवा लेले से तबला सीखा। अपने जीवन के उपलब्धिमूलक यादगार प्रसंगों में ओंकारनाथ ठाकुर, विनायक पटवर्धन, रजबअलीखां, विलायतखां, नारायणराव व्यास, रामकृष्ण, गजाननराव जोशी के साथ की गई तबला संगत की स्मृतियों को बखानित करते वे कईबार आनंदानुभूतियों में खोगये।

उदयशंकर अपने समय के एकमात्र अकेले ऐसे कलाकार थे जिन्होंने कम उम्र में विश्व पटल पर अपनी ख्याति दर्ज कराई। सन् 1931 में यूरोप यात्रा के दौरान उनका सम्पर्क अमलानंदी से हुआ। यह सम्पर्क बाद में दोनों को विवाह सूत्र में आबद्ध कर गया। यही अमलानंदी आगे जाकर अमलाशंकर के नाम से प्रसिद्ध हुई।

उदयशंकर की प्रयोगात्मक नृत्यशैली में शंकरस्कोप उल्लेखनीय है जो फिल्म तथा मंच का मिश्रित रूप था। फिल्म में भी कलर और क्लोजअप जैसे शक्तिशाली माध्यम लिये। यह उनका एक ऐसा अद्भुत प्रयोग था जिसकी सर्वत्र सराहना हुई। रामलीला तथा भगवान बुद्ध में उन्होंने छाया नाटक की शैली का प्रभाव दिया। उनकी नृत्यनाटिकाओं में जीवन में लय तथा मजदूर श्रम व यंत्र उनकी सृजनशील प्रतिभा को अलग से रेखांकित करती है।

यह सही है कि उदयशंकर के बाद उन जैसा कोई अन्य कलाकार नहीं हुआ। अभी तो उनकी नृत्यकला की देन को भी ठीक से नहीं समझा गया है। सितम्बर 1977 में उनका निधन हो गया। अंतिम दिन उनके बड़े कष्ट में व्यतीत हुए। लकवे से पीड़ित होकर वे लाचार ही हो गये थे। उन्हें लगा कि जैसे उनका अब कोई नहीं है।

खोज-खबर

गवरी खेल में धारनगर का राजा

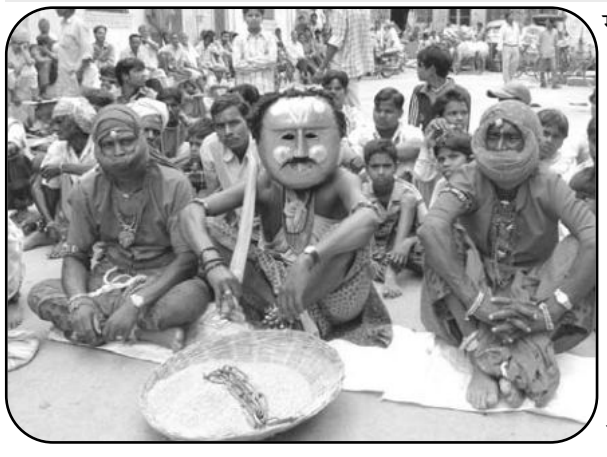

आदिवासी भीलों के गवरी में एक खेल गरड़ा नाम से आता है। इसमें दो चोर धारनगर के राजा को लूट सामान की गांठ बांध ले जाते हैं। गीत है- 'धारनगर का राजाओ ठाकर खेती का रसिया ओ घणा।' यह धारनगर किसी ने बताया कि राजनगर का प्राचीन नाम है। राजनगर अब राजसमंद नाम से जाना जाता है जो अलग से जिला भी है।

लेकिन उदयपुर से 15 किलोमीटर की दूरी पर धार गांव बसा हुआ है। मैं 8 जुलाई 2004 को इस स्थान पर पहुंचा जहां खुमा खराड़ी से भेंट की। मेरे साथ भगवान कच्छावा थे। खराड़ी गवरी खेल में कुटकड़िया की भूमिका लेते हैं। उन्होंने बताया कि यही धारनगरी थी। यहां पुराना हनुमान मंदिर, रावला मउड़ा, ढणका कुवा, माया मगरी, कोइला परवत, राणी माल्यो, राजा जेला रो गढ़, डूंगरिया री वेरी नामक सारे स्थान अभी भी इन्हीं नामों से जाने जाते हैं। यहां राणी ने वखा काटा यानी दुर्दिनों की परेशानियां झेलीं। गेलोतों का वास माछलो आंबो के वहां हाथी ठाण था। यहां राजा जेल्या का निवास था। बड़ा अच्छा रावला महल था। पास में धार पाटणा में वेला वाणिया, केला कुमारिया नामी बड़े लोग रहते थे। दवियां यहां नोरता का सामान-जौ, कलश, मेहंदी, लच्छा, कंकू लेने आती थी। यहीं बड़ल्या बावसी का स्थान है। खुमा खराड़ी तथा गोपीलाल वडेरा गमेती ने हमें इन सारे स्थानों का भ्रमण कराया।

देवली पहाड़ पर पुराना खंडित मंदिर है। यहां पुजारी रूप में शीशारमा से पंडित आता था। वह संतान विहीन था। एकबार उदयपुर दरबार भी पधारे। उन्होंने मूरत दूसरी बिठाई। प्रताप इन्हीं जंगलों में रहते थे। धार के मांगीलाल पुजारी मिले। इनके पिता लालूराम तथा दादा जयचंद पुजारी का ही काम करते थे।

उबेसर नाम

उबेश्वरजी के बाहर का हिस्सा महाराणा सज्जनसिंह ने बनवाया। उबेश्वर नदी बड़ी में जा मिलती है। वैशाखी पूनम तथा हरियाली अमावस को उबेश्वरजी में मेला भरता है। धार गाम, गणका कुवा, धोर्‌यो परवत, कोइला री पाज, राजा जेल्या रो गढ़ ; इनके ऐरेमेरे 9 गेंडा हाथी धन गड़ा हुआ है। धार से नीचे की ओर वेरी है, पगल्या है, धड़ है। यहां बारहों मास पानी रहता है।

धार के पुजारी भुर्रीलाल नागदा ब्राह्मण ने बताया कि एकबार प्रताप एकलिंगनाथ उबेश्वरजी की पूजा कर रहे थे कि अचानक लिंग फटा। उससे मधुमक्खियां निकलीं जिससे फौज देबारी जाकर भागती नजर आई और लटक गई। प्रताप रामा होकर एकलिंगजी गये। नंदकेसर के भाला ठोका जिसमें से भमर निकल उड़ने लगे। प्रताप ने सवा लाख का छतर बोला तब भमरों से पीछा छूटा। नंदकेसर को थेगली लगा ठीक किया। उस पर प्रताप के भाले का निशान है।

विभूत गरजी महात्मा थे, मिलेट्री महात्मा। जलाहारी चार मुखी है। लिंग हिलता है। सिर जितना ही है। जलाहारी ऊपर से प्रवेश कराई। एक दिन उसने कहा कि अब नहीं आ सकूंगा। प्रताप ने उसे वहां हाथ-मुंह धोने ऊबा किया तो उस स्थान का नाम उबेसर पड़ा। उबेसर के पास पहाड़ी पर बड़ल्या वाली डांग पर प्रताप के महल थे। पास ही अजमेर्‌या का खादरा, राणी माल्या पहाड़ पर झूला डाल कंवर झूलते। केला की बावड़ी हाथी बंधते थे। वहां कुई अभी भी है।

यहीं छोटा जामुन का वृक्ष है जिसे माकण्या जामुन कहते थे। यह गिरा हुआ है। गरट भी पड़ा है जिससे चूना पीसा जाता था। राजा जेलू का गढ़ देखा। चोखा पिता देवा गमेती ने बताया कि पास में हाथी बांधने का ठाण था। घोड़ों की पाइगा भी थी। मथारे पर चित्तौड़्या बावजी भैरुजी की थावर को चौकी लगती है। मई छठ को मेला लगता है। भैरुजी की बींटी-गोळ धारण करते हैं। यहां धण का कुवा है जेलू राजा के समय का। पास ही कोइला परवत है।

खड़ा गोत के केसूजी (70) गेलोता का वास के रहने वाले हैं। उन्होंने बताया कि राजा जेल रा गड़, राणी माल्यो की बनावट में डेढ़ फीट की ईंट लगी हैं। महाराणा भूपालसिंह के हाथी यहां बंधते। 10-12 हाथी चरते थे। उनके पास सौ हाथी कभी पूरे नहीं हुए। हाथी को सामने वाली चीज बड़ी नजर आती है। वह खरगोश से डरता है किन्तु शेर को मार गिराता है। शीत ऋतु में हाथियों को मूंग देते। हाथी बड़ा समझदार जानवर होता है। गाली देन पर वह पत्थर फैंकता है। सोता बहुत कम है। सोते समय सूंड को मुंह में डाल देता है। कुत्ते की तरह बैठकर नींद लेता है। उसके कान के पास मद बहता है तब वह मस्ती में आ जाता है। ऐसी स्थिति में इधर-उधर घूमता रहता है। **-म.भा.**

इतिहास के अभिनव पन्ने

झालावाड़ राजघराने के श्री चन्द्रसिंह झाला के नाम लिखी चिट्ठी

-सागरमल जैन, बीजावत

कुछ दिन पहले उदयपुर से डॉ. महेन्द्र भानावत द्वारा प्रकाशित 'शब्द रंजन' पत्रिका में श्री ललितजी शर्मा द्वारा लिखित 'झालावाड़ राज्य का इतिहास' पुस्तक पर आपके द्वारा सम्मानित कार्यक्रम संबंधी समाचार जानकर प्रसन्नता हुई। पूर्वजों के प्रति श्रद्धा तथा इतिहास में आपकी रुचि से और भी अच्छा लगा। मेरे पूर्वज झालरापाटण/ बोलिया गांव के निवासी थे, खूब सम्पन्न थे। बोलिया, पाटण और मंदसौर आदि जगह उनकी दुकानें थी।

झालरापाटण में एक हवेली भी थी जो बोलियावाले मा साबह की हवेली के नाम से आज भी जानी पहिचानी जाती है। परिस्थितिवश मेरे दादाजी ने वह हवेली उज्जैन विनोद मिल के मालिक विनोदीराम-बालचंद्र के यहां गिरवी रख दी, जिसे उन्होंने अब किसी बर्तन के दुकानदार को बेच दी है।

किसी प्रसंगवश में आठेक वर्ष की उम्र में जब बोलिया गया था तब श्री मन्नालालजी राठौर, सरपंच पंचायत समिति, बोलिया ने मुझे कहा था कि तुम्हारा घर तो वह घर था जिसने पेशवा की फौजें पाछी फेरी थीं। उसके बाद भी बोलिया में कई के मुख से मैंने यह बात सुनी। महाराजश्री जालिमसिंहजी के समय में, खंडणी वसूल करने के लिए पेशवाई फौज ने पाटण को घेर लिया था और नगर का सारा जीवन अस्त-त्रस्त हो गया था। लोग छिप गये थे। मेरी दादी / पड़दादी भी छिपने लगी तो किसी ने कहा कि सेठानी तुम क्यों छिपती हो।

उन्होंने पेशवाई अधिकारी को बुलाकर कहा-'तुम हमें क्यों परेशान कर रहे हो, तुम्हें क्या चाहिये।' उत्तर था- 'धन'। प्रत्युत्तर में दादी ने कहा- 'तुम्हें कितना धन चाहिये, वह मैं दूंगी परन्तु तुम्हारा घेरा आज ही उठ जाना चाहिये।' हवेली के पिछले दरवाजे की एक सीढ़ी तोड़कर उन्होंने फौज के सब ऊंट, घोड़े एक ही सिक्के से भरवा दिये।

झालावाड़ के तत्कालीन महाराज को जब यह पता चला तो झालावाड़ राज का सम्मान रखने के उपलक्ष्य में उन्होंने इस परिवार को एक ताम्रपत्र दिया और दादी के साथ की सहेली से विवाह कर इस हवेली-वंश को उनके ससुराल के गौरव से गौरवान्वित किया। सुना है कि उस विवाह में बनी 'माया' आज भी वहां अक्षुण्ण है। यह भी सुना कि उन महाराव को बाद में अंग्रेजों ने अपदस्थ कर दिया और वे बनारस चले गये।

विपन्न अवस्था में मेरे पिताजी 'डग' आ गये और पचपहाड़ वालों की दुकान पर रोकड़िया का काम करने लगे। डग से हम मंदसौर आये और मेरा इंटरमीजियेट तक का शिक्षण मंदसौर में हुआ। कुछ मुख्य बिन्दु निम्नानुसार हैं-

मेरा जन्म स्थान डग। ग्वालियर विक्टोरिया कॉलेज से मैंने जोग्रोफी में एम. ए. किया। छोटीसादड़ी जैन गुरुकुल (नीमच के पास) में अध्यापन। फिर 1965 में केन्द्रीय विद्यालय में अध्यापक, फिर क्रमश: प्राचार्य, शिक्षाधिकारी और अंत में हैदराबाद संभाग (आंध्रप्रदेश और कर्नाटक राज) का सहायक आयुक्त होकर सेवा निवृत्त हुआ। अब अहमदाबाद में स्थायी रुप से निवास है। उम्र का 89वां वर्ष चल रहा है।

सिंधिया वंश से कुछ संबंध होने की बात भी सुनी है। कैसे और क्या संबंध थे वह नहीं जानता हूं। माधवराव सिंधिया (वर्तमान सांसद ज्योतिरादित्य सिंधिया के पिता) ने ग्रेट मराठा नाम की रीरियल बनाई थी जो महादाजी सिंधिया के जीवन पर आधारित थी। पेशवा के छोटे भाई राधो बा दादा के षड़यंत्र से सिंधिया वंश की ग्वालियर की जागीर पेशवा ने प्राप्त कर ली। महादाजी बहुत दुखी थे। उन्होंने मल्हार राव होल्कर से सलाह ली। होल्कर ने उन्हें पूना जाकर पेशवा के सम्मुख अपना प्रकरण रखने की बात कही परन्तु यह भी कहा कि पूना जायें तो अकेले मत जाना। सेना लेकर जाना क्योंकि आजकल पूना षड़यंत्रों का केन्द्र बना हुआ है।

सेना एकत्र करने के लिए महादाजी ने होल्कर महाराज से आर्थिक सहायता की व्यवस्था करवाने की बात कही। दो मारवाड़ी सेठों ने अगले होय में महादाजी को थैली भेंट करते दिखाया गया था। मुझे ऐसा विश्वास लगा कि उनमें से एक मेरे परिवार के थे।

मेरे पास बचपन में एक ऐसा पत्र भी था, जिसमें मंदसौर की दुकान से जावरा के नवाब को रू. 50000 उधार दिये जाने की बात का उल्लेख था। मेरे पास इस विषयक कोई प्रमाण तथा दस्तावेज इस समय नहीं है।

बोलिया में नदी के पाट में हमारी एक अष्ट पहलू छत्री बनी हुई है जिसकी शिल्पकला का उल्लेख सीतामऊ के राजकुमार डॉ. रघुवीरसिंहजी ने अपनी एक पुस्तक में किया है। इसके शासकीय रेकर्ड की एक लिपि भी मेरे पास है। झालरापाटण के नाम संबंधी एक लोकोक्ति इस प्रकार भी है।

झाला रो पाटण :

झाला का पाटण अर्थात् केन्द्र स्थान, राजधानी जो बाद में झालरापाटण बन गया। अभी दो-एक महिने पहले ही किसी ने कहा कि भाई! इस गांव में इतने देव मंदिर थे कि कोई भी व्यक्ति किसी भी समय वहां जाता तो उसे किसी न किसी दिशा से मंदिर की झालर की आवाज सुनाई देती थी। इस पर से इस शहर का नाम झालरापाटण हो गया। झालावाड़ राज्य के इतिहास, उसकी वीरता, समृद्धि तथा धार्मिक लगन पर मुझे गर्व है जिसके आप वंशज हैं।

कलेरिऑन इन होटल का शुभारंभ

उदयपुर। च्वाइस ग्रुप ऑफ होटल्स ने जयपुर में कूकस स्थित रीको औद्योगिक क्षेत्र में होटल कलेरिऑन इन का शुभारंभ किया है। होटल के चैयरमेन राधारमण रावत ने होटल के विधिवत शुभारंभ की घोषणा की।

इस अवसर पर प्रबंध निदेशक सुरेश कुमार गुप्ता ने बताया कि 3000 वर्गमीटर क्षेत्र में फैले इस होटल में तीन श्रेणियों में कुल 90 कमरों की सुविधा है जिसमें 10 सुइट, 20 डीलक्स और 60 सुपीरियर श्रेणी में हैं। होटल के सुसज्जित कमरों में टी मेकर, मिनी बार, सेफ हाई स्पीड नेटवर्क, वर्कडेस्क के साथ दो विशाल बैंक्वेट हॉल, मल्टी कुजिन रेस्टोरेंट, जिसमें भारतीय कॉन्टिनेंटल भोजन के साथ राजस्थानी भोजन का स्वाद देशी-विदेशी पर्यटक ले सकेंगे। पार्टी, विवाह समारोह के लिए ग्राउंड फ्लोर पर विशाल गार्डन की सुविधा भी है।

श्री गुप्ता ने बताया कि सात मंजिले इस होटल में भूतल पर शानदार फ्रंट ऑफिस, बेसमेंट पर प्रशासनिक कार्यालय, दूसरी से पांचवीं मंजिल तक अतिथियों के ठहरने के 90 कमरों की व्यवस्था है। कुछ कमरों में ट्विन रूम सुविधा है जो छोटे परिवार के ठहरने के लिए उपयुक्त है। इस भवन का निर्माण वास्तुकला को ध्यान में रख कर किया गया है। इसकी आंतरिक सज्जा दिल्ली के प्रख्यात डिजाइनर विक्रम खत्री ने की है। होटल में विश्वस्तरीय जिम और स्पा का निर्माण प्रगति पर है। इसके अलावा भविष्य में थाई फूड सहित अन्य सुविधाएं होटल में शुरू किया जाना प्रस्तावित है।

शब्द रंजन

उदयपुर, बुधवार 15 फरवरी 2017

सम्पादकीय

प्रतिमाओं की होड़ में प्रताप

अनुभवी लोग कहते हैं कि आदमी में ईर्ष्या नहीं होनी चाहिये, स्पर्धा भले ही हो। ईर्ष्या आदमी को अपदस्थ करती है जबकि स्पर्धा ऊंचा मुकाम देती है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पिछले दिनों मुम्बई के समुद्र में शिवाजी की सर्वाधिक ऊंची प्रतिमा स्थापित करने का शिलान्यास किया तो राजस्थान में उस प्रतिमा से भी ऊंची प्रताप की प्रतिमा स्थापित करने की इतिहासविज्ञों ने बात उठा दी।

महाराष्ट्र वालों ने शिवाजी को अपना आदर्श माना है जैसे प्रताप राजस्थान के लिए गौरवशाली बने हुए हैं। प्रताप बड़ी संघर्षमूलक स्थितियों में रहे। अन्य राजे रजवाड़े अकबर की अधीनता में चले गये तब भी प्रताप अपनी ऐंठ, सत्व और स्वाभिमान में रहे और लाख मुसीबतें झेलने के बावजूद अपनी टसक ठसक नहीं छोड़ी।

प्रताप के ऐसे चरित्र और आचरण वाला अन्य कोई उदाहरण इतिहास के पन्नों में नहीं मिलता है। उनकी मुसीबतों और संघर्षमय जीवन का कौन साक्षी रहा। वे जंगल-जंगल भटकाव खाते रहे। खाने-पीने को लाले पड़ते रहे। एक विशेष प्रकार की घास के बीज से बनी रोटी से अपना व अपने परिवार का गुजारा करते रहे। पुत्र के हाथों ऐसी घास की रोटी भी वनविलाव छीनकर भागता बना। जब स्वयं के रहने का ठिकाना नहीं रहा तब सामंत जागीरदार भी उनके पक्ष में कैसे रहते पर कुछ तो होते ही हैं वफादार जो अंत तक साथ दिये रहते हैं।

प्रताप की असल जीवनी अभी खोजी नहीं गई है। हल्दीघाटी को सबसे बड़ा राष्ट्रीय स्मारक बनाया जाना चाहिये। ऐसा स्थल विश्व में कहीं नहीं मिलेगा। धर्मवीर भारती जब महाराणा मेवाड़ का हल्दीघाटी पत्रकारिता पुरस्कार लेने आये तब मैं उन्हें हल्दीघाटी ले गया था। रक्ततलाई क्षेत्र में पांव देते ही उन्होंने मुझसे कहा था, 'भानावतजी ! यह कोई विशिष्ट स्थल लगता है। मेरा रोम-रोम रोमांचित हुआ जा रहा है।' तब मैंने कहा था, 'यह रक्ततलाई का क्षेत्र है। यहीं हल्दीघाटी युद्ध हुआ था।' उन्होंने दण्डवत हो उस स्थल को नमन किया और वहां की चिमटी भर माटी की पुड़िया तैयार की। मुम्बई जाकर मुझे लिखा- ' जिस सरस्वती की प्रतिदिन मैं आराधना करता हूं, उसी के साथ हल्दीघाटी की माटी की भी पूजा कर रहा हूं।'

यही नहीं, कविवर कन्हैयालाल सेठिया को भी मैं इसी तरह हल्दीघाटी ले गया जहां वे अपनी आंखें बड़ी कर चारों ओर की मगरियां निहारते-निहारते अभिभूत हो रहे थे। मैंने उनसे सवाल किया, 'ये चारों ओर फैले प्रस्तर के पहाड़ हैं। ऐसे ही मजबूत हाड़ प्रताप और उनके घोड़े चेटक का था। यहां कहां धोरों के पहाड़ हैं! कोई सुन भी ले तो कल्पना नहीं कर सकता कि रेत के भी पहाड़ होते हैं। आपने 'धरती धोरा री' कविता लिखकर पूरे राजस्थान को रेतीला बना दिया। यह मेवाड़ है। इससे लगा वागड़ और हाड़ौती देखिये। इनसे लगा गुजरात मालवा देखिये। कहीं कोई धोरों की धरती नहीं मिलेगी।' सेठियाजी चुप रहे मगर मैंने उन्हें चुप नहीं रहने दिया तब उन्होंने कहा, 'यदि मैं पहले मेवाड़ देख लेता तो धरती धोरां री पंक्तियां नहीं लिखता।'

सच ही है, प्रताप हमारी विरासत बने हुए हैं। जब-जब भी, जहां-जहां भी स्वतंत्रता, स्वाधीनता और आजादी की बात चलेगी, प्रताप वहां-वहां सबके आदर्श बनेंगे। प्रताप का नाम सदा ही स्वर्णाक्षरों में अंकित हुआ मिलेगा। सच भी है कि जब कोई व्यक्ति या कोई देश या फिर राष्ट्र निराशा के घोर अंधकार में डूब जाता है और उसे यह लगता है कि उसकी आजादी छीनी जा रही है तब ऐसे घोर दु:ख और अवसाद के क्षणों में प्रताप ही हमारी प्रेरणा बन रोशनी की किरण देता है।

ऐसे प्रताप के प्रतापी पौरूष से जन-जन को प्रेरणा मिले और युग-युगों तक उनके संघर्षशील स्वाधीनचेता मनुष्यत्व को लोग याद करते रहें, जरूरी है कि उनका उसी बुलन्दगी वाला ऐसा स्मारक बने जो सचमुच में उनकी धवल कीर्ति को पूरे विश्व में यशस्वी बनाता रहे।

पत्र-पिटारी

उत्तम व ज्ञानवर्धक सामग्री के साथ 'शब्द रंजन' के अंक यथासमय प्राप्त हो रहे हैं। अभी विशेष आर्थिक तंगी से कुछ वित्तीय सहयोग नहीं कर सका हूं। करूंगा, कर्त्तव्य है। 'स्मृतियों के शिखर' स्तंभ में नगर की पुरानी विभूतियों को उजागर कर रहे हैं, साधुवाद। इस दफा चन्द्र गंधर्व पर आलेख पढ़कर गंधर्व के साथ सम्बद्ध कई-एक यादें ताजा हुईं। क्या खूब! **-प्रो. देवकर्ण सिंह, उदयपुर**

'शब्द रंजन' उदयपुर के संस्कृतिधर्मियों पर बढ़िया लिखकर राजस्थान की मातृभूमि का ऋण चुका रहा है। अभिनंदन एवं अभिवादन। **-डॉ. शरद पगारे, इंदौर**

'शब्द रंजन' मिल्यो, आभार। आ ही कृपा नियमित बणाई राख ज्योजी। लक्ष्मीनारायणजी राव की जीवनी तो बड़ी ही आश्चर्यवर्द्धक एवं आकलक है, बधाई। **-अंबु शर्मा, कोलकाता**

निर्दलियों ! तुम महान हो

- डॉ. देवेन्द्र 'इन्देश'-

व्यंग्य

चुनाव सन्निकट हैं। सभी राजनीति के पहलवान संकट में हैं, विशेषकर सरकारी पहलवान। यदि सरकारी पहलवान चुनाव में चित्त हो गये तो जाहिर है सरकार सरक जायेगी। कष्ट यह नहीं है कि सरकार सरक जायेगी, इल्लत यह है कि सरकार पक्ष की तरफ सरकेगी या विपक्ष की तरफ लुढ़केगी। पक्ष सरकार बचाने में जुटा हुआ है। विपक्ष इस जुगाड़ में है कि सरकार किसी तरह लुढ़क जाए और हम कूद कर कुरसी पर बिराज जाएं। इस समय सरकार को बचाना मौजूदा सरकार के लिए नाक का सवाल है। जनता नोटबंदी की मार से घायल है। इधर भयंकर महंगाई में पेट भरने की चिन्ता है। उसके सामने नोट और पेट का सवाल है तो सरकार के सामने अपनी नाक का। नाक तब बचेगी जब सरकार बचेगी, और ये विपक्षी सरकार की नाक काटने पर ही आमादा हैं।

इस संकटकालीन बेला में सब की निगाहें निर्दलियों पर ही टिकी हुई हैं। निर्दलीय एक ऐसा प्राणी है जिसको चुनाव का टिकिट नहीं दिया जाता और दल से निकाल दिया जाता है। वह अपने दम पर राजनीति में बिल बना लेता है, तथा बिना दल के होते हुए भी जीतने पर निरादलीय हो जाता है।

कहते हैं जब सरकार गिरने के कगार पर होती है तो केवल निर्दलीय ही उसको डूबने से बचा सकते हैं। वे निर्दलीय होते हुए भी बहुत काम के होते हैं। वे सरकार के तारणहार बन जाते हैं। गिरती सरकार के असहाय नेता निर्दलियों की स्तुति करने में लग जाते हैं। निर्दलीय भी मौके का फायदा उठाते हैं। सारे निर्दलीय एक स्वर में उवाचते हैं- भइये, हम लोग तुम्हारी गिरती सरकार को बचा सकते हैं, यदि हमारी मुट्ठी गरम कराओ तो सोचें.... हम सब तो स्वतंत्र हैं भाईजी। हमारी कोई पार्टी-वार्टी तो है नहीं, जिसके कोई कायदे कानून हों। हम तो अपने मन के राजा हैं, और जो इस मन के राजा को प्रत्यक्ष राजा बनायेगा, उसी का समर्थन कर देंगे।

तो क्या चाहते हो मेरे भाई, सरकार के दुखी नेता ने कहा। निर्दलीय ने मुस्कराते हुए कहा- यदि तुम्हारी सरकार गिरने से बचायेंगे तो केन्द्र में कोई मलाईदार कुरसी तो पायेंगे। अगर बना सकते हो तो बोलो, अन्यथा विपक्ष हमें बुला रहा है। हमारा क्या है, अगर तुमसे भाव नहीं पटेगा तो दूसरी खोली में भाव पटाने चले जायेंगे। ज्यादा सोचा-साची करी तो हम उतकू चले जायेंगे, और यदि मान गये तो इतकू आ जायेंगे। सरकार के असरदारजी चिरौरी करते हुए बोले- दयानिधान! हमारी सरकार संकट में है, वह अल्पमत में आ गयी है। कुछ थोड़ा बहुत ले-देके बचा लो।

निर्दलीय कुटलीप मुस्कान से उवाचे- जरूर बचायेंगे असरदारजी, पर आप भी तो सोचो। सोचेंगे, यह कहते हुए गिरती सरकार के असरदारजी चले गये। असरदारजी अभी थोड़ी ही दूर गये होंगे कि विपक्षी दल के कारिन्दों ने निर्दलियों को घेर लिया।

- क्यों जी ! आप ही निर्दलीय हैं ना ...। - क्यों ? आपको हम निर्दलीय नहीं लग रहे हैं? अच्छा, अगर आप निर्दलीय हैं तो देश-हित में सरकार गिराने का पुण्य कार्य क्यों नहीं कर डालते। निर्दलीय उवाचे- अच्छा, तो सरकार गिरानी है। पर कितनी गिरानी है। विपक्ष- क्या मतलब, अरे भई, इतनी गिरानी है कि सरकार फिर उठ न सके और हम उछल कर इन कुर्सियों पर बैठ जाएं और आनंद से सरकार चलाएं। अच्छा तो आप सरकार गिराकर अपनी सरकार बनाने का ख्वाब देख रहे हैं, पर इसमें हम आपकी क्या मदद कर सकते हैं? अरे, आप ही तो हैं जो हमारी मदद कर सकते हैं। आप सरकार से समर्थन वापस लेकर हमारे दल में आ जाओ। क्या बात करते हो विपक्षी भैया, हम तो निर्दलीय हैं। हम आपके दल में कैसे आ सकते हैं?

कैसे नहीं आ सकते, आप सरकार गिराने के एवज में जो भी मांगोगे हम आपको दे देंगे। निर्दलीय फिर उवाचे- सरकार गिराने के एवज में हम कोई सरकार में बड़ा पद लेंगे। कौन सा पद चाहते हो, मेरे निर्दलीय भैया? अरे इतने भोले मत बनो। जिस पद के लिए तुम सब हायतौबा कर रहे हो तथा सरकार गिराने पर आमादा हो उससे बड़ा पद भी कोई और होता है सरकार में। वही हमें दो तो हम सरकार गिराने के लिए तैयार हैं। मतलब,.... प्रधानमंत्री का? और नहीं तो क्या? विपक्ष- यह नहीं हो सकता, हम निर्दलीय को प्रधानमंत्री नहीं बना सकते। ठीक है, तो अब हम तुमको एक उपाय बताते हैं। तुम सब हम निर्दलियों के दल में क्यों नहीं मिल जाते हो और हम सब मिलकर सरकार गिरा दें तथा पार्टी का लफड़ा छोड़ कर निर्दलियों की नयी सरकार बना लें। वाह रे वाह, निर्दलियों तुम्हारा भी जवाब नहीं है। वास्तव में तुम महान हो।

एस्ट्रोसैट की आत्मकथा

-शिव मृदुल-

मैं एस्ट्रोसैट हूं। यह मेरे एस्ट्रोलोजिकल सैटेलाइट का संक्षिप्त नाम है। मैं खगोल विज्ञान के अध्ययन हेतु पूरी तरह समर्पित अपने तरीके का पहला कृत्रिम उपग्रह हूं। वैज्ञानिक चिन्तन मेरी संरचना की संकल्पना का आधार है। वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन में ही मैंने अपना आकार ग्रहण किया है।

मित्रो ! मैं अपने मुंह मियामिट्ठू नहीं बनना चाहता हूं किन्तु यह सत्य है कि मेरा शारीरिक सौष्ठव अद्वितीय है। मेरा वजन 1650 किलोग्राम है तथा मेरे निर्माण में 180 करोड़ रूपये व्यय हुए हैं। मेरा भीमकाय शरीर अत्याधुनिक आवश्यक वैज्ञानिक उपकरणों से सुसज्जित है। इसे मैं यों कहूं तो अधिक सार्थक होगा कि मुझ में पूरी वैद्यशाला स्थित है। इसे आप मल्टीवेव लेंग्थ ऑबजरवेटरी कह सकते हैं। यह हमें हमारे चारों ओर पसरे रहस्यमयी ब्रह्माण्ड के अज्ञात रहस्यों से सम्बन्धित सूचनाएं उपलब्ध कराने में सक्षम है। इसमें भारतीय तथा कई अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं का सहयोग रहा है।

मुझे वह शुभ दिन आज भी याद है, जब मुझे हरिकोटा (आन्ध्रप्रदेश) लाया गया। उस समय मेरा यांत्रिक हृदय बहुत प्रफुल्लित था। मेरे मन में उल्लास की उत्ताल तरंगें प्रवाहित हो रही थीं। आप जानते ही हैं कि हरिकोटा आधुनिक नया तीर्थ है। यहां भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन है। इसे आप इसरो कहते हैं।

बंधुओं ! अप्रेल 2009 में टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फण्डामेंटल रिचर्स ने मेरे में निहित उपकरणों के जटिल संयोजन की प्रक्रिया को अंतिम रूप दिया। मई 2015 में मेरे तैयार होने तथा अंतिम परीक्षण की सूचना को सार्वजनिक किया गया। 24 जुलाई 2015 को मैं पूर्णरूपेण तैयार हो गया तथा मुझे सोलर पैनल से जोड़ा गया और मेरे अंतिम स्पंदन का परीक्षण प्रारंभ हुआ। 10 अप्रेल 2015 तक सभी परीक्षण सफल हो गए।

वह 28 सितम्बर 2015 का शुभ दिन था। मुझे हरिकोटा में स्थित 'सतीश धवन अंतरिक्ष केन्द्र' पर स्थापित किया गया। मुझे यहां ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान-सी 30 (पी एस एल वी-सी 30) से जोड़ा गया और मैंने उसकी सहायता से सफलतापूर्वक अंतरिक्ष में उड़ान भरी है। इस प्रकार भारत देश, मेरे उड़ान भरते ही अमेरिका, यूरोपियन सूनियन, रूस तथा जापान के बाद अंतरिक्ष में अपनी वैधशाला स्थापित करने वाला पांचवा देश बन गया है।

बन्धुओं ! इस नये तीर्थ में स्थित इसरो के 'पी एस एल वी-सी 30' अंतरिक्ष में कृत्रिम उपग्रह स्थापित करने का इतिहास बहुत ही रोचक है। 'पी एस एल वी-सी 30' (ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान) ने अंतरिक्ष में उपग्रह स्थापित करने का पहला प्रयास 20 सितम्बर 1993 को किया था किन्तु वह प्रयास असफल रहा। इससे इसरो संगठन के वैज्ञानिक हताश नहीं हुए ; क्योंकि वे जानते हैं, असफलता ही सफलता का राजमार्ग है।

हां, इसके बाद इस नये तीर्थ इसरो ने 1994 से 2015 ई. तक 'पी एस एल वी-सी 30' की सहायता से अंतरिक्ष में मेरी स्थापना के साथ उपग्रह प्रक्षेपण के 30 सफल प्रयास करने का गौरव प्राप्त कर लिया है। यह इन प्रयासों में अमेरिका के चार लेमून सैटेलाइट, इण्डोनेशिया के 'एल ए पी ए एन-ए 2' और कनाडा के 'एन एल एस 14 ईवी' 9 उपग्रहों को अंतरिक्ष में स्थापित कर चुका है। इसमें कुल 84 उपग्रह सम्मिलित हैं, जिनमें 7 सैटेलाइट तथा 51 विदेशी उपग्रह हैं।

आज मैंने 31वें क्रम पर (अर्थात् 30वीं सफल) उड़ान भरी है। वैज्ञानिकों ने मुझे बहुत बड़ी आशाओं की संकल्पना के साथ अलविदा कहा है। मैं अंतरिक्ष की ऊंचाइयों से उनके चेहरे की मुस्कान पढ़ रहा हूं। मेरी सफल उड़ान इसरो की सफलता के इतिहास में एक और मील का पत्थर है।

हां सुनो ! मैं अपनी कक्षा में स्थापित हो गया हूं। अंतरिक्ष यात्रा का आनंद ले रहा हूं। मैंने जिन उद्देश्यों से उड़ान भरी है उनमें न्यूट्रोन स्टार्स और ब्लैक हॉल से मुक्त बाइनरी स्टार सिस्टम तथा न्यूट्रोन स्टार्स के चुम्बकीय क्षेत्र का तथा 'क्ष' किरणों के कारण और प्रभाव का आकलन तो है ही, इसके साथ ही तारों के जन्म क्षेत्रों, दो तारों के समूह तथा हमारी आकाश गंगा से परे मौजूद तारामण्डलों की उच्च ऊर्जा प्रक्रिया का अध्ययन भी सम्मिलित है।

लो, मैं निर्वात में पहुंच चुका हूं। देखना है, मैं वैज्ञानिकों के उद्देश्यों में कहां तक सफल हो पाता हूं। यह तो आने वाला समय ही बतायेगा। बस, मेरी प्रथम वर्षगांठ पर आपसे मेरा तो यही निवेदन है कि मैं आपको जो भी सूचनाएं भेजूं, उनका अभिलेख संधारण करते रहना और मानवता के हित में उनका उपयोग करना। मेरे उपकरण में स्पंदन आने लगा है। लगता है, मुझे कुछ आवश्यक सूचनाएं प्राप्त होने वाली हैं। अच्छा शुभकामनाएं !

पोथीखाना

मैं हूं सोन चिरैया

-डॉ. कहानी भानावत-

राष्ट्रसंत गणेशमुनि शास्त्री ने साहित्य की सभी विधाओं में प्रचुर साहित्य का सृजन किया फलस्वरूप अमर जैन साहित्य संस्थान उदयपुर द्वारा उनका यह साहित्य प्रकाशित हुआ जिसकी संख्या 350 से अधिक है।

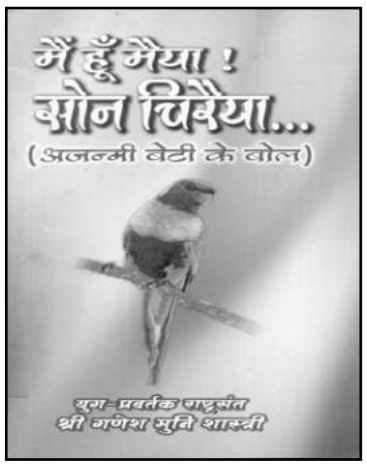

प्रस्तुत 'मैं हूं मैया ! सोन चिरैया' पुस्तक उनके जीवनकाल की अंतिम कृति है जो उनकी देखरेख में तैयार हो गई थी किन्तु उनके रहते इसका प्रकाशन नहीं हो सका। बाद में उनके अन्तेवासी शिष्य जिनेन्द्र मुनि 'काव्यतीर्थ' द्वारा यह प्रकाशित हुई जो स्वयं अच्छे कवि, सुमधुर गायक तथा सुचिंतक हैं।

आजादी के बाद महिलाओं की पुरूषों के बराबर की भागीदारी और महिला समुदाय के सशक्तीकरण पर बड़ा बल रहा तब भी कन्या भ्रूण हत्या का सिलसिला जैसे बढ़ता गया। कई समाजों में लड़कों की तुलना में लड़कियों की घटती संख्या समस्या बनी हुई है।

प्रस्तुत कृति की काव्याएं अजन्मी बेटी के बोल के रूप में समाज में व्याप्त कन्या भ्रूण की घिनौनी समस्या पर जबर्दस्त प्रहार कर जन-जन को झकोरने का सार्थक प्रयास हैं। गुलाब कोठारी की राय में सीधे पाठक के मर्म को भेदती कविताएं निष्ठुर से निष्ठुर मन को भी पिघला देती हैं।

मुनि तरुणसागर ने बेटी को 2 टी माना जो ससुराल और पीहर दोनों को ताजगी देने वाली और बेटा को 2 टा अर्थात् टा टा कहकर बेटे से बेटी को अधिक महत्वपूर्ण माना। संग्रह की पहली कविता है-

सुन मेरी मैया !
मैं हूं सोन चिरैया /
बेटी बन
आ रही हूं दुनिया में /
हो जाऊंगी एक दिन फुर्र /
तुम खुशी-खुशी
मेरी आरती उतारो /
तुम मुझे मत मारो /
मैया मुझे मत मारो।

और आखिरी कविता देखिये -

किसी को मां चाहिए,
किसी को बहिन /
किसी को भाभी तो
किसी को बुआ /
यह तब होगा सार्थक
जब परिवार को मिलेगी।
बेटी की दुआ।

तेरह त्रिपदियां

-ब्रजेन्द्र कौशिक-

(1) पाते हैं
खुद को वे ही जो
खुद को खो देते
(2) वही कहो
जिसको करने की
खुद में क्षमता हो
(3) जो करना
करने से पहले
उस पर मनन करो
(4) औरों पर
आसान नियंत्रण
खुद पर बहुत कठिन
(5) बाधा भी
सुविधा लगती यदि
उससे नहीं डरें
(6) करने पर
मालुम पड़ता हम
क्या कर सकते हैं
(7) दोष न दो
दर्पण को चेहरे
की कालिख पोंछो
(8) जब कोई
मांगे सलाह है
देना तभी उचित
(9) इस-उसकी
चिन्ता जिनको वे
खुद की कम सोचें
(10) जो खुद में
सिमटा वह ही है
सबसे सुरक्षित
(11) शिखरों पर
वे पहुंचें चढ़ते
खड़ी चढ़ाई जो
(12) डरते हैं
डरने वाले ही
किसी चुनौती से
(13) आजादी
से अधिक कीमती
कोई चीज नहीं

मैं जहां हूं, ठीक हूं

-दिनेश रावत-

रहने दो मुझे
ऐसे ही फटेहाल में
मत डालो
माया के जंजाल में
अभी कम से कम मैं
अपनों को तो जानता हूं
पीड़ा क्या होती है
किसी गरीब की
ये तो पहचानता हूं
मेरी रोटी
मुझे मिल-बांटकर खाने दो
साथ लेकर सभी को
पथ पर अभी बढ़ जाने दो
मैं नहीं चाहता
रौंद कर किसी को आगे बढ़ूं
चीत्कार से किसी के
सपने सुनहरे गढ़ूं
नसीब से अधिक कुछ भी
नहीं मुझे मिल जायगा
होगी यदि कुछ
सत्कृति जीवन की
तो स्वयं ही
जीवन खिल जायगा
मैं जहां हूं,
जिस हाल में हूं
ठीक ही हूं
कम से कम पांव जमीन पर
बीच अपनों के तो हूं।।

पोथीखाना

अक्षर-विश्व की पहली कविता

-बसंत निरगुणे-

डॉ. मालती शर्मा 'गोपिका' की पुस्तक 'लल्ला-लल्ला लोरी' लोरी पर लिखी एक महत्वपूर्ण और दुर्लभ किताब इस मायने में सबसे अलग स्थान रखती है कि लोरियों पर आज तक बहुत कम लिखा गया है। कोई ऐसी किताब नहीं मिलती, जिसमें लोरियों पर मनोवैज्ञानिक विचार किया गया हो। 'लल्ला-लल्ला लोरी' पुस्तक ने उस रिक्ति को भरने की कोशिश की है।

लोकसाहित्य की वाचिक परम्परा में तो लोरियों की भरपूर सामग्री मिलती है, लेकिन रचना साहित्य में लोरियों की कमी देखी गई है। मुझे पता नहीं साहित्य क्षेत्र में केवल लोरियों पर स्वतंत्र रूप से कोई कवि, शायर रचनाशील हो, अथवा केवल लोरी लिखने के लिए ख्यात हो जबकि लोरी ही गीत के जन्म का प्रस्थान बिन्दु है। गीत का जन्म संभवत: लल्ला को थपकी देकर सुलाने वाले मां के गीत गाने के अनगढ़ शब्द और स्वर से ही हुआ हो। गीत की तह में जाने पर हमें इस रहस्य का पता लग सकता है।

डॉ. मालती शर्मा लिखती हैं- 'लोरी गीत अनादि और अनंत हैं। इनका न प्रारंभ निर्धारित किया जा सकता है और न अंत ही। अनादि काल से मानव-शिशु को विश्व की सभी माताएं गोद में हिला-डुलाकर कंधे से लगा, थपकी दे, बिछौने पर लिटाकर, पालने में झुलाकर और मजदूर माताएं तो दो पेड़ों के बीच एक कपड़े की तह कर उसके चारों कोने बांधकर, पालना बनाकर लोरी गाकर सुलाती आ रही हैं।

अंग्रेजी में लोरी को 'क्रेडिल सांग' कहते हैं। खोज करने पर विश्व की अन्य भाषाओं में भी लोरी के नाम और रूप मिल सकते हैं, पर शिशु को सुलाने वाली मां की लोरी को मैं मानव के अक्षर विश्व की 'पहली कविता' मानती हूं।' लोरी गीतों की निर्झरणी है मां के हृदय से निकलने वाली निर्मल कविता की धारा। इस बात को महसूस करते हुए मालतीजी लिखती हैं- 'लोरियां शिशु के जन्म से, मां के हर्ष भरे, सुख समाधानपूर्ण हृदय के वात्सल्य भाव की निर्झरणी हैं। इन गीतों में अपने लाला को रोते से चुप कराने, उसे सुख की नींद सुलाने की मां की ममता की आशा-आकांक्षाएं और विविध उपाय, अस्फुट गुनगुनाहट, लयात्मक निरर्थक शब्द और मधुर गीतों के रूप में थपकियों की ताल पर ओठों से झरते हैं।'

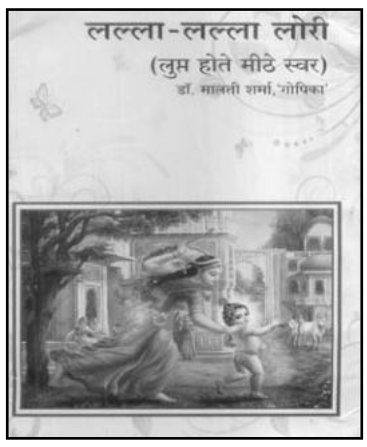

पुस्तक के पहले अध्याय में लोरी पर मालतीजी ने जितना अच्छा सार्थक और व्यापक विश्लेषण किया है, इतना कोई मनोविश्लेषक भी नहीं कर सकता। जिस भावुक भाषा में मालतीजी ने लोरी की व्याख्या की है, वह लोरी साहित्य के लिए धरोहर बन गया है।

मालतीजी लिखती हैं- 'लोरियों की संरचना सहज, सरल हैं। पंक्तियां छोटी हैं, तीन-चार शब्दों की पदावली, कोमल और अनुप्रास अलंकारपूर्ण। अनुप्रास अलंकार का नाद सौन्दर्य और ध्वन्यात्मकता लोरियों का प्रमुख घटक तत्व है।

जैसा कि कहा- लोरियों की संरचना में शब्द अधिक नहीं होते हैं, पर उनकी लययुक्त पुनरावृत्ति, अंतिम शब्द का लम्बा नाद उत्पन्न करता है। यही ध्वन्यात्मक नाद शिशु को सम्मोहित करता है और उसे सुलाता है।'

लोरी की वैज्ञानिकता का जिक्र करते हुए मालतीजी ने लिखा है- 'आज तो विज्ञान सम्मत प्रसूति शास्त्र ने अपनी खोजों में मां के गर्भ में ही शिशु की ग्रहणशीलता स्थापित कर दी है पर हमारे पौराणिक आख्यानों में तो अभिमन्यु का गर्भ में ही चक्रव्यूह का ज्ञान और मदालसा का अपने पुत्रों को लोरियों से तत्व ज्ञान कराने के पुष्ट प्रमाण हैं।

इन प्रमाणों के साथ हमारी लोक परंपरा तो प्रकृति और ईश्वर के साथ गर्भावस्था में ही शिशु के निर्माण में मां के दिये संस्कारों की सर्वोपरिता की समर्थक है। वह मानती है कि गर्भाधान से जन्म तक मां के दिये संस्कारों से ही मानव-शिशु का निर्माण होता है, उसका पूरा शारीरिक, मानसिक विकास।'

शिशु चर्या के लोरी गीत, बच्चों को खिलाने के लोरी गीत, बच्चों के खेल, बालगीत, तुकबंदियां और लोरी के बाद नींद, मां, बच्चा, चिड़ियां, चंदामामा, गाय, ब्रज की लोरियां (संग्रह और विश्लेषण) जैसे शीर्षकों में लोरी की व्याख्या की यह पहला उपक्रम लोरी पर शोध अध्ययन और

समग्र लेखन का द्वार खोलता है। विश्वविद्यालयों को लोरी के प्रत्येक अंग पर शोधकार्य कराया जाना चाहिये। इसका श्रेय भी डॉ. मालती शर्मा को ही देना चाहिये। उन्होंने एक भूले-बिसरे, विलुप्त होते विषय को फिर से जगा दिया है। मालतीजी के इस कार्य की जितनी प्रशंसा की जाए, उतनी कम है। एक अनुभवी लेखिका की इस रचना के प्रत्येक शब्द और अभिव्यक्ति हमारी साक्षात् धरोहर है।

प्रमोद कवि का 'प्रेम पारायण'

कवि प्रमोद 'बिरहमन' के इस तीसरे काव्य-संग्रह 'प्रेम पारायण' में 94 कविताएं हैं जो कवि-पत्नी आशा गंगा द्वारा संकलित-संपादित हैं। भूमिका मनोगत में आशाजी ने लिखा- स्व. प्रमोद 'बिरहमन' की पहली पुस्तक 'सूर्यमुखी भूल गई लिखना' उनके जीवन के अंतिम छत्तीस दिन पूर्व ही छपकर आई। दूसरी गजल पारायण निकली। उन्हें पेन, पेन्सिल, कलर जो भी मिल जाता, कोई भी रेखांकन, कलाकृति बनाने की रुचि थी। उनमें से 6 कलर चित्र इस पुस्तक में दिये हैं।

कवि बिरहमन की दृष्टि में 'कविता किसी के खिलाफ अभियोग पत्र नहीं, अपने होने की खामोश पैरवी है।' विविध विषय, भावों की ये कविताएं कवि के मिजाज-मन की साक्षी तो हैं ही, उनके स्मृतिशेष जीवन की स्मरणिकाएं भी हैं। 'कविता वहां नहीं रूकी' कविता की ये पंक्तियां द्रष्टव्य हैं-

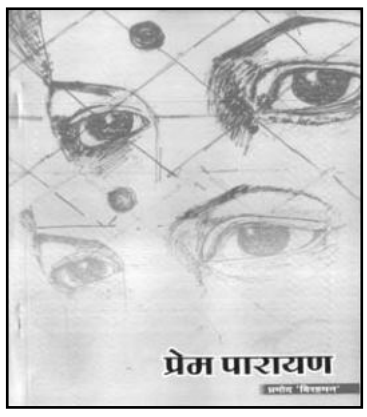

कविता वहां नहीं रूकी /
जहां कलम थमी /
कलम के थकते ही /
कविता करुणा से हंसी /
और बहुत देर तक /
वो किसी सिरहाने बैठी रही।
इस तरह कविता /
न जाने कहां-कहां गई /
उसके पदचिन्ह तलाशता हूं /
और खोज जारी है /
शायद कविता /
कोंकण के घाट उतर गई /
शायद वो /
नर्मदा पार कर गई है /
आगे बीहड़-जंगल-पहाड़ /
शायद सबको पार करती
वो चंबल के तीरे थमी है।
चम्बल जो झूठ को झूठ कहती /
समय की प्रत्यंचा पर तनी है।

संग्रह में प्रत्येक कविता की रचना तिथि दी गई है जो 1994 से 2005 तक की लिखी हैं। **- डॉ. कविता मेहता**

बीकानेर में वैवाहिक प्रसंग

अपने दोहित्र विकल्प-अनिशा के उदयपुर विवाहोत्सव के बाद 12 फरवरी को बीकानेर में आशीर्वाद मिलन भोज रखा गया। पिछले करीब 35 वर्ष से आत्मजा कविता-सतीशजी मेहता वहां महाविद्यालय में अध्यापन कार्य कर रहे हैं। उदयपुर से तुक्तक-रंजना-शब्दांक तथा कहानी-जितेन्द्रजी और नये बने ब्याण-ब्याई सुनीता-राकेशजी बैंगानी का साथ था।

ऐसे समारोह के लिए शहर के बीच सूरज भवन आलीशान स्थल है जहां ठहरने की भी उत्तम व्यवस्था है। उदयपुर की तुलना में यह स्थान ऊंट के मुंह में जीरा शुल्क है। समारोह में मुख्यत: मेरे अध्ययनकाल के सन् 1954-58 के साथी ख्यातलब्ध एडवोकेट सच्चिदानंदजी से भेंट खूब रही। उस काल के अनेक दोस्तों का स्मरण हो आया पर अधिकांश के स्मृतिशेष होने की खबर ने मुझे शोक संतप्त कर दिया।

सुनिताजी ने खबर दी कि पास ही के रामपुरिया भवन में तेरापंथी साध्वी श्रद्धेया पानकुमारीजी बिराजी हुई हैं जो 77 वर्ष पूर्व आचार्यश्री तुलसी से दीक्षित हुई थीं। मुख्य साध्वी डॉ. परमयशाजी अपनी छह साध्वियों के सिंघाड़ा के साथ उनका सौभाग्य-सान्निध्य लिए हैं। उनके दर्शन कर मैं भी धन्य हुआ।

भोज का सारा कार्य सतीशजी से पढ़े नरेन्द्रजी सिपाणी के जिम्मे चार बजे तक चला। सिपाणीजी ने तो सांध्यकालीन दावत अपने घर पर रख हमारा जो आत्मीय आतिथ्य किया उससे हम अकल्पनीय अभिभूत हुए। नरेन्द्रजी प्राचीन संस्कृति और धरोहर के रखरखाव के प्रति बड़े सजग और समर्पित मन लिए हैं। अपनी स्वयं की हवेली को भी वे पुरातन रंग-ढंग से संवार रहे हैं। उन्होंने बताया कि बीकानेर में छोटी-बड़ी साढ़ा चार हजार के करीब हवेलियां हैं। सर्वाधिक चर्चित तो रामपुरियों की ही सात हवेलियां हैं। कई हवेलियां खंडहर बनती जा रही हैं। उनको उसी रूप में लाने के लिए अत्यधिक आर्थिक भार उठाना दुष्कर है।

उन्होंने बताया कि पुराने शहर की बसावट जातिवाइज मोहल्लों की है। ऐसे 135 मोहल्ले हैं। ओसवाल समाज के ही 27 गवाड़ हैं जो मोहल्ले अथवा चौक नाम से जाने जाते हैं। इन मोहल्लों के अपने-अपने पाटे हैं। चौपाल के रूप में जिन पर पुरुष समाज बैठकर बतरस का आनंद लेते हैं। ऐसे ही शहर की सुरक्षार्थ जुदा-जुदा नामवाची छह गेट और आठ बारी हैं।

नरेन्द्रजी ने अपने घर में हमें जमीन पर बिठाकर बड़े यत्न से पाटिये पर थाल जीमण जिमाया। एक-एक थाल में छह-छह जीमने बैठे। दस-दस व्यक्ति तक जीमते हैं। ऐसे बड़े थाल उनके घर में देखने को मिले। थाल- भोजन की यहां पूरी संस्कृति है जिसके स्वास्थ्य की दृष्टि से, सौहार्द की दृष्टि से, मेलमिलाप तथा भाईचारे की दृष्टि से उन्होंने अनेक लाभ गिना दिये।

डॉ. सतीशजी ने मुझे पवनपुरी स्थित डॉ. धर्मचंदजी जैन से भेंट कराई। उनसे मेरा मिलना तो नहीं याद पड़ता पर उनके लेखनादि से खूब परिचित हूं। बड़े सवेरे ही आध-पौन घंटे की उनसे हुई मुलाकात बड़ी संजीदगी लिये रही। डॉ. जैन रूक्टा के अध्यक्ष के रूप में और वर्तमान में संरक्षक के रूप में शिक्षाजगत में लोकप्रिय हैं। वे होम्योपैथिक दवाइयों के भी डाक्टर हैं जो वर्षों से रोगियों की निशुल्क सेवा कर रहे हैं। जैन समाज के विविध संघ-सम्प्रदायों से उनका गहरा जुड़ाव बना हुआ है।

यहीं रह रहे डॉ. किरण नाहटा के घर भी हमारा जाना हुआ। डॉ. नाहटा का असामयिक निधन पूरे साहित्य-जगत के लिए पीड़ादायक रहा। उन्होंने राजस्थानी साहित्य-संस्कृति के क्षेत्र में जिस समर्पण और साधनापूर्वक लेखन किया वह गर्वजनित है। वे बड़े मिलनसार, सहृदय, विनीत, गुण ग्राहक तथा खोजी प्रज्ञा लिए थे। मेरे अग्रज डॉ. नरेन्द्र भानावत के निर्देशन में उन्होंने अपना उल्लेखनीय शोधप्रबंध लिखा, इस दृष्टि से वे हमारे अति पारिवारिक प्रियजन थे। बीकानेर का यह अत्यल्पकालीन प्रवास मेरे लिए अनेक उपलब्धियों का सबब बना।

-म.भा.

गुरु गोरखनाथ से सम्बद्ध भैरु बाबा नाम से बस्ती से फेरी द्वारा भक्त-श्रद्धालुओं की भेंट स्वीकार करात है। इनके कंधे पर भैरु झोली, कमर में बड़े-बड़े घुघरुओं का पट्टा तथा हाथ में खप्पर होता है। भगवा वेश किये शंखध्वनि करता है तथा एक पांव को हिलाते घुघरु की गूंज देते हैं। मेवाड़ में इसे गुगर्‌या बाबा के नाम से जाना जाता है।

सोने का हुक्का वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में

उदयपुर के अंतर्राष्ट्रीय स्वर्णशिल्पी इकबाल सक्का द्वारा निर्मित विश्व का सबसे छोटा हुक्का गोल्डल बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज हुआ है। हुक्के की ऊंचाई 5 तथा नलकी (पाईप) की लम्बाई 4 मिली मीटर है। इस हेतु रिकॉर्ड्स के प्रबंधक माईकल वानडेन चीयर ने यूएसए कार्यालय से प्रमाण पत्र जारी किया है।

चित्तौड़ा अध्यक्ष, मीठालाल उपाध्यक्ष

उदयपुर। सहकारी उपभोक्ता भण्डार लि. मण्डी की नाल उदयपुर वार्ड 5 की बैठक नरसिंहपुरा नोहरा मण्डी की नाल में हुई। बैठक में समिति चुनाव पर चर्चा हुई।

सभी सदस्यों द्वारा सर्वसम्मति से अध्यक्ष पद पर पारस चित्तौड़ा, उपाध्यक्ष मीठालाल चित्तौड़ा, कोषाध्यक्ष अनिल बंसल, सह कोषाध्यक्ष अनिल जैन चुने गये। इसके अलावा कल्याणमल जैन, अशोक गोधा, कैलाश अग्रवाल, अजीत जैन, पवन चित्तौड़ा, कैलाश अग्रवाल, राजेश करणपुरिया एवं तारादेवी समिति सदस्य चुना गया। शांतिलाल करणपुरिया ने कार्यकारिणी को पद व गोपनीयता की शपथ दिलाई।

कान्यो मान्यो

कान्यो मान्यो दोनों चौपाल पर आकर बैठे आमने सामने तप ताप रहे हैं। इतने में दोनों में सुरसत उपजी लिहाजा एक पंक्ति कान्यो ने दी तो मान्यो ने उससे मेल खाती दूसरी पंक्ति जड़ दी।

जीमण डूंगला को। गुड़ो भला को।।
भैरु भदेसर को। बट्‌टो देवर को।।
भाखणी अड़भोपा की। गायामां चोपा की।।
बांग कूकड़ा की। रांग सूपड़ा की।।
ब्याव हूड़ी को। पाणी कूड़ी को।।
पोट मकोड़ा की। सबर थोड़ा की।।
तांगो अब्दुल को। धूप गूगल को।।
बावड़ी चोरां की। डावड़ी ओरां की।।
धरम धाप्या को। थान माप्या को।।
भाव देवरा को। वींद सेवरा को।।
कैणी ताव की। रैणी राव की।।
दरद मीरां को। फैरो फकीरां को।।
अंगोठो आण को। झगड़ो राण को।।
सत्त राम को। गत्त काम को।।
मूंदड़ी सीता की। सौगन गीता की।।
आर झारी को। काटणो आरी को।।
तोल ताकड़ी को। मोल आकड़ी को।।
बेटी सासरे की। नींद आसरे की।।
धार थन की। लार धन की।।
परूण घोड़ा को। परवार जोड़ा को।।
आग खबरां की। जोत जबरां की।।
रंग रंगत को। संग वगत को।।
वाट दीवा की। राब पीवा की।।
घोखो आंख को। उड़न्यो पांख को।।
मींगणा ऊंट का। औखद सूंठ का।।
मूत गायां को। हेत भायां को।।
झाड़फूंक झाडू की। रसोई लाडू की।।
लावो परण को। बैठणो मरण को।।
कूंची बिन ताला की। साली बिन साला की।।
सफाई जाला की। फेरणी माला की।।
गाजणो नार को। वाजणो वार को।।

प्रश्न कवि-मन से

-डॉ. विद्याविंदुसिंह

मैं कवि-मन से प्रश्न करती हूं
क्यों नहीं हो पाता निर्द्वन्द्व?
क्यों नहीं सो पाता सुख की नींद?
क्यों सबके दुख ताप का लावा
मन में खौलता रहता है, हृदय को मथता रहता है?
क्यों सबका क्रोध, असंयम सह कर भी
सबके मन की चिन्ता करता है?
क्यों बगैर अपराध के भी
आत्म ग्लानि से गलने लगता है
कि वह किसी के दुख का कारण है?
क्यों सबके अहंकार के शिखर के सामने
नत मस्तक हो क्षमा याची बन जाता है
ताकि आस-पास सुख शांति बनी रहे।
क्यों लोगों की लगाई तोहमतें
प्रियजनों के कच्चे कान सुनकर सच मान लेता है
और संवाद मुक्त हो जाता है।
क्यों नहीं कोशिश करता अविश्वासों की खोदी गई
अंधी खाई को पाटने की?
'सुख-दुक्खे समेकृत्वा, लाभालाभौ जयाजयो।'
की तप साधना जब लगता है लक्ष्य पर पहुंचने वाली है
तभी उसके मन की शांत गहरी झील में
कंकड़ी फेंककर लहरों के आवर्त्त बनाने लगते हैं
वे लोग, जिन्हें प्राणों सा प्रिय माना, सहेजा।
तब संवादहीनता की स्थिति में भीतर बहता लावा
कलम की नोक से बहकर कागज पर पसरने लगता है।
और तब मन हल्का हो जाता है।

ल्यूब्रिजॉल और फिनोलेक्स इंडस्ट्रीज में गठबंधन

उदयपुर। सीपीवीसी कंपाउंड के आविष्कारक एवं दुनिया में सबसे बड़े विनिर्माता ल्यूब्रिजॉल कॉर्पोरेशन और भारत की अग्रणी पीवीसी पाइप्स एवं फिटिंग्स विनिर्माता फिनोलेक्स इंडस्ट्रीज लि. ने गठजोड़ की घोषणा की है। इस

फ्लोगार्ड प्रोसेसर अनुबंध के अंतर्गत, भारत में फिनोलेक्स फ्लोगार्ड0 प्लस पाइप्स एवं फिटिंग्स का उत्पादन किया जायेगा। इस उत्पाद को फिनोलेक्स इंडस्ट्रीज द्वारा बाजार में मार्च 2017 के अंतिम सप्ताह में लॉन्च किया जायेगा और यह भवन एवं निर्माण उद्योग की जरूरतों की पूर्ति करेगा।

ल्यूब्रिजॉल ऐडवांस्ड मैटेरियल्स इंडिया प्रा.लि. के प्रबंध निदेशक मैथ्यू टिमन्स ने कहा कि ल्यूब्रिजॉल भारत के गर्म एवं ठंडे वाटर प्लम्बिंग बाजार को सेवायें प्रदान करने के लिए उच्चतम गुणवत्ता के सीपीवीसी कंपाउंड की आपूर्ति के लिए समर्पित है। फिनोलेक्स इंडस्ट्रीज के साथ हमारी साझेदारी गुणवत्तापूर्ण सीपीवीसी पाइप्स एवं फिटिंग्स के महत्व की जरूरत पर जोर देती है।

इन उत्पादों को ल्यूब्रिजॉल द्वारा उपलब्ध कराये जाने वाले समय परीक्षित सीपीवीसी कंपाउंड्स से बनाया जाता है। जनवरी 2016 से, हम दाहेज, गुजरात में आधुनिकतम संयंत्र में इन विश्वस्तरीय सामग्रियों का निर्माण कर रहे हैं। फिनोलेक्स के साथ हमारा गठजोड़ देशभर में फिनोलेक्स के व्यापक नेटवर्क के माध्यम से भारत में विश्वसनीयता पदान करने की फ्लोगार्ड की प्रतिबद्धता को और सुदृढ़ करेगा।

फिनोलेक्स इंडस्ट्रीज लि. के एक्जीक्यूटिव चेयरमैन प्रकाश छाबड़िया ने कहा कि हम ल्यूब्रिजॉल के साथ सहयोग के माध्यम से प्लम्बिंग उद्योग को मजबूत बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। यह भारतीय बाजार में 'भारत निर्मित' गुणवत्तापूर्ण उत्पादों को उपलब्ध कराने की फिनोलेक्स इंडस्ट्रीज की संस्कृति के अनुरूप है।

हमें कंपाउंडिंग में ल्यूब्रिजॉल की वैश्विक विशेषज्ञता का पूरा भरोसा है और हम प्लम्बिंग उद्योग को धातु-आधारित से सीपीवीसी-आधारित पाइपिंग में बदलने के लिए उनकी प्रशंसा करते हैं। फ्लोगार्ड के कच्चे माल एवं सपोर्ट के साथ, भारतीय बाजारों के लिए सर्वोत्कृष्ट उत्पादों को प्रदान करने का हमारा ट्रैक रिकॉर्ड और सुदृढ़ हुआ है। हम एक सफल साझेदारी की कामना करते हैं।

रैडिसन उदयपुर बेस्ट बिजनेस होटल अवार्ड से सम्मानित

उदयपुर। रैडिसन उदयपुर को वर्ष 2016 के लिए बेस्ट बिजनेस होटल फॉर दि ईयर के पुरस्कार से सम्मानित किया गया है जो होटल और रेसॉर्ट्स को विश्व स्तर की उनकी सुविधाओं को मान्यता देने के लिए दिया गया है।

है। भारतीय जनता पार्टी के सांसद मनोज तिवारी ने रैडिसन उदयपुर के महाप्रबंधक रिचर्ड बरुआ को यह पुरस्कार सौंपा। नौवें वार्षिक इस्टेट अवार्ड्स फंक्शन का आयोजन फ्रैंचाइज इंडिया ने ईटी नाऊ के साथ मिलकर किया। इस अवसर पर रिचर्ड बरुआ ने कहा कि यह बेहद गर्व की बात है कि हमें इस प्रतिष्ठा वाले पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। हम अपनी सेवाओं को आगे और अच्छा करना चाहते हैं।

रिचर्ड बरुआ ने कहा कि होटल और रेसॉर्ट्स के लिए पहली बार पुरस्कार शामिल किया

उन्होंने बताया कि रैडिसन उदयपुर शहर के केंद्र में यहां का पहला अपस्केल बिजनेस होटल है जो लेकसिटी मॉल में स्थित है। होटल में अच्छे सुविधाजनक कमरे और सुइट हैं जो सुविधाओं, साइज और सेंट्रल हीटिंग तथा कूलिंग के लिहाज से सर्वश्रेष्ठ है। सभी कमरों में वर्क स्टेशन, कॉर्डलेस फोन एलईडी सैटेलाइट टेलीविजन, टी-कॉफी मेकर, इलेक्ट्रॉनिक सेफ और डव अमेनिटीज हैं। इसके अलावा, सभी कमरों में फ्री हाई स्पीड इंटरनेट ऐक्सेस है ताकि अतिथि कनेक्टेड रहें, काम से या खेलने के लिए।

मिसाइल प्रणालियों के विकास हेतु संयुक्त उद्यम स्थापित

उदयपुर। भारत के बहुर्राष्ट्रीय इंजीनियरिंग समूह एवं निजी क्षेत्र की प्रमुख कंपनी-लार्सेन ऐंड टुब्रो और मिसाइल प्रणालियों में दुनिया में अग्रणी-एमबीडीए ने भारतीय सशस्त्र सेना की बढ़ती आवश्यकताएं पूरी करने के लिए मिसाइल एवं मिसाइल प्रणालियों के विकास एवं आपूर्ति के लिए संयुक्त उद्यम स्थापित किया है।

एलऐंडटी के समूह कार्यकारी अध्यक्ष ए. एम. नाईक ने बताया 'एलऐंडटी एमबीडीए मिसाइल सिस्टम्स लिमिटेड' नामक यह संयुक्त उद्यम कंपनी एक निर्धारित कार्यस्थल से परिचालन करेगी, जिनमें पाइरोटेक्निकल एकीकरण एवं फाइनल चेकआउट संयंत्र शामिल होंगे। आवश्यक स्वीकृतियां मिल जाने के उपरांत, वर्ष 2017 की पहली छमाही में इसके शुरू हो जाने का अनुमान है। एलऐंडटी की इस कंपनी में 51 प्रतिशत और एमबीडीए की 49 प्रतिशत की हिस्सेदारी होगी। इस संयुक्त उद्यम को भारत में पंजीकृत किया जायेगा और यह भारतीय नियमों के अनुसार भारतीय कंपनी अधिनियम के आधार पर चलाया जायेगा। यह नई कंपनी मिसाइल्स एवं मिसाइल प्रणालियों में व्यावसायिक अवसरों पर ध्यान देगी और यह रक्षा खरीद के बाय (भारतीय-आईडीडीएम), बाय (भारतीय) और बाय ऐंड बैंक (भारतीय) श्रेणियों के तहत संभावनाओं पर लक्ष्य करेगी।

एलऐंडटी और एमबीडीए ने भारतीय एमओडी ऑर्डर्स के लिए जटिल तकनीकों और उन्नत आयुध प्रणालियों जैसे माइका मिसाइल लॉन्चर्स एवं कंट्रोल एक्चुएशन यूनिट्स सहित एयरफ्रेम सेगमेंट्स समेत प्रमुख उप-प्रणालियों के सह-निर्माण एवं उत्पादन हेतु सहयोग किया है। संयुक्त उद्यम के दोनों ही सहयोगियों का भारतीय थल सेना के भरोसेमंद आपूर्तिकता होने का ट्रैक रिकॉर्ड है और वे जल, थल और वायु सेना के लिए महत्वपूर्ण आयुध प्रणाली एवं रक्षा समाधान उपलब्ध कराते रहे हैं। शुरू में, यह संयुक्त उद्यम कंपनी पांचवीं पीढ़ी की एंटी-टैंक गाइडेड मिसाइल्स, कोस्टल बैटरीज के लिए मिसाइल्स और हाई स्पीड टार्गेट ड्रोन्स तैयार करने एवं उनकी आपूर्ति करने पर ध्यान देगी।

श्री नाईक ने बताया कि एलऐंडटी, डीआरडीओ एवं डीपीएसयू के डेवलपमेंट पार्टनर एवं प्रोडक्शन एजेंसी के रूप में विभिन्न स्वदेशी आयुध (मिसाइल/ रॉकेट्स/ टॉरपेडो) प्रोग्राम्स के लिए लॉन्च सिस्टम्स, फायर कंट्रोल सिस्टम्स व एयरफ्रेम्स की रेंज उपलब्ध कराता रहा है। अपनी निर्माण एवं सिस्टम एकीकरण क्षमताओं और एमबीडीए की तकनीकी उत्कृष्टता को साथ लाकर, हमें उम्मीद है कि हम संपूर्ण मिसाइल सिस्टम्स उपलब्ध करा सकेंगे, जिनका अब तक भारतीय सशस्त्र सेनाओं की मांगें पूरी करने के लिए आयात किया जाता था।

हिन्दुस्तान जिंक़ के धातु उत्पादन में वृद्धि-मुनाफा बढ़ा

उदयपुर। हिन्दुस्तान जिंक़ लिमिटेड ने मुम्बई में आयोजित अपनी निदेशक मण्डल की बैठक में 31 दिसम्बर 2016 को समाप्त तीसरी तिमाही व नौ माही के वित्तीय परिणामों की घोषणा की।

जिंक़ के चेयरमैन अग्निवेश अग्रवाल ने कहा कि पिछले वर्ष की समान तिमाही की तुलना में जस्ता धातु की कीमतों में 55 प्रतिशत की वृद्धि के साथ हिन्दुस्तन जिंक़ का अच्छा प्रदर्शन रहा है। वित्तीय वर्ष 2017 की तीसरी तिमाही में खनिज धातु का उत्पादन पिछली तिमाही की तुलना में 44 प्रतिशत अधिक हुआ है। तीसरी तिमाही में उत्पादन में वृद्धि, पिछली तिमाही की तुलना में, रामपुरा आगुचा ओपन कास्ट व भूमिगत खदान अयस्क का उत्पादन अधिक रहा है।

एकीकृत जस्ता धातु का 205,000 मैट्रीक टन उत्पादन हुआ जो इसी वर्ष की पहली तिमाही की तुलना में 38 प्रतिशत अधिक है। एकीकृत बिक्री योग्य सीसा धातु का उत्पादन 39,000 मैट्रीक टन रहा जो पिछली तिमाही की तुलना में 26 प्रतिशत अधिक है। चांदी धातु का उत्पादन 118 मैट्रीक टन हुआ जो गतवर्ष की समान अवधि के तुलना में 10 प्रतिशत अधिक दर्शाता है। वित्तीय वर्ष की तीसरी तिमाही के दौरान कंपनी ने 2,320 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ अर्जित किया है जो पिछली तिमाही की तुलना में 22 प्रतिशत एवं गत वर्ष की समान अवधि की तुलना में 26 प्रतिशत अधिक है। कंपनी ने 5,348 करोड़ रुपये का राजस्व अर्जित किया जो पिछली तिमाही की तुलना में 40 प्रतिशत तथा गत वर्ष की समान अवधि की तुलना में 45 प्रतिशत अधिक है।

हिन्दुस्तान जिंक़ के हेड-कोर्पोरेट कम्यूनिकेशन पवन कौशिक ने बताया कि रामपुरा आगुचा खदान में शाफ्ट सिंकिंग का कार्य पूर्ण हो गया है तथा कायड़ खदान व सिन्देसर खुर्द के विस्तार का काम भी सुचारू रूप से चल रहा है। सिन्देसर खुर्द खदान में शाफ्ट कॉलर एवं हेड गियर स्थापना का कार्य चौथी तिमाही में पूर्ण हो जाने की संभावना है। हरित ऊर्जा को प्रोत्साहन देने के लिए हिन्दुस्तान जिंक़ ने देबारी तथा दरीबा में १६ मेगावाट का कैप्टिव ऊर्जा प्लांट लगाया है। अपने हरित प्रयासों के लिए हाल ही में सीआईआई तथा आईजीबीसी ने हिन्दुस्तान जिंक़ के मुख्य कार्यालय यशद भवन को 'प्लेटीनम रेटिंग' से सम्मानित किया है। हिन्दुस्तान जिंक़ भारत की चौदवीं प्लेटीनम बिल्डिंग है तथा राजस्थान की पहली प्लेटीनम रेटिड बिल्डिंग है।

नि:शुल्क नेत्र परीक्षण शिविर आयोजित

उदयपुर। श्री सेवा संस्थान, निम्बाहेड़ा द्वारा चलाये जा रहे मोतियाबिंद मुक्त निम्बाहेड़ा प्रोजेक्ट के तहत वंडर सीमेंट लि. एवं गोमाबाई नेत्रालय नीमच के सहयोग से उप जिला अस्पताल में नि:शुल्क नेत्र परीक्षण शिविर लगाया गया।

शिविर का शुभारंभ स्वायत शासन एवं नगरीय विकास, आवासन मंत्री, राजस्थान सरकार श्रीचंद कृपलानी एवं वण्डर सीमेण्ट के अध्यक्ष शशीमोहन जोशी, सहायक उपाध्यक्ष (वाणिज्य) नितिन जैन, श्री सेवा संस्थान के सचिव एवं पूर्व विधायक अशोक नवलखा द्वारा किया गया।

नितिन जैन ने बताया की शिविर में निम्बाहेड़ा एवं आस-पास के गाँवों के कुल 576 नेत्र रोगियों की जाँच एवं परिक्षण किया गया। इसमें से 265 रोगियों का मोतियाबिंद ऑपरेशन एवं 24 रोगियों को आंखों की अन्य बीमारियों की जांच व उपचार के लिये रेफर किया गया। शिविर में बड़ी संख्या में समाज सेवकों एवं नगरवासियों ने भाग लिया। इस दौरान नगर पालिका अध्यक्ष कन्हैयालाल पंचोली, उपाध्यक्ष पारसमल पारख, सेवा संस्थान के उपाध्यक्ष मोहम्मद सईद खान, शिविर संयोजक सत्यप्रकाश जेथलिया, जितेन्द्र सिंघवी, संतोष जैन सहित कई स्वयं सेवकों ने सहयोग किया।

उदयपुर में दूसरा वर्ल्ड म्यूजिक फेस्टिवल

इटली, भारत और यूके की प्रस्तुतियों ने मन मोहा

उदयपुर। उदयपुर में 10 से 12 फरवरी तक दूसरा वर्ल्ड म्युजिक फेस्टिवल आयोजित किया गया। वंडर सीमेंट और राजस्थान टूरिज़्म के साथ मिलकर हिंदुस्तान जिंक द्वारा आयोजित इस फेस्टिवल में पहले दिन गांधी ग्रांउड में कार्यक्रम का आगाज मकदूनिया के जिप्सी बैण्ड के कलाकार कोकानी आर्केस्ट्रा की प्रस्तुति के साथ हुआ। उनके मोनोस्विज बैंड ने सुर और ताल से ऐसा समां बाधा कि दर्शक झूम उठे। उनकी प्रस्तुति 'सांग्स ऑफ नेचर' में मकदूनिया के संगीत के साथ ही जैज, फॉक म्यूजिक की जुगलबंदी दर्शकों का खूब पसंद आई। इसके बाद इलेक्ट्रिक सूफी वर्ल्ड संगीत के ख्यातनाम कलाकार कनाड़ा के नियाज और इरान के आजम अली की जोड़ी मंच पर छा गई। तबले की थाप पर सूरों की धाक ऐसी जमी कि दर्शक 'वाह-वाह' कर उठे। उनके संगीत ने देश की सीमाओं से परे जाकर दिल में विश्व राग का जज्बा जगाया।

पहले दिन का मुख्य आकर्षण हाल ही में पद्मश्री सम्मान के लिए चुने गए कैलाश खेर की प्रस्तुति रही। उन्होंने 'अल्लाह के बंदे..' प्रस्तुत किया तो म्यूजिक लवर्स ने 'कैलासा-कैलासा' का शोर मचाकर आसमान सिर पर उठा लिया। कैलाश ने कहा, 'मोहे सुधबुध ना रही तन की उदयपुर, ये तो जाने दुनिया सारी..तेरे नाम से जी लूं, तैरे नाम पे मर जाऊं'। इस पर झूमते, गाते और हाथ लहराते दर्शकों की टोलियों ने समां बांध दिया। कैलाश ने श्रृंगार रस में डूबा नगमा 'मोहे डारो न रंग' गाया तो सुनने वाले झूम उठे। इसके बाद कैलाश ने 'मैं तो तेरे प्यार में दीवाना हो गया', 'आज मोरे पिया घर आवेंगे', 'सखी मंगल सजाओ री', 'मोहे सुध-बुध ना रही तन की', 'आवोजी-आवोजी म्हारा चतुर सजन' सुनाकर समां बांध दिया।

इससे पहले गृहमंत्री गुलाबंचद कटारिया और कार्यक्रम के निदेशक सहर के संजीव भार्गव ने कार्यक्रम का रंगारंग आगाज किया। कटारिया ने कहा कि हम सबको मिलकर झीलों के इस शहर दुनिया का सबसे खूबसूरत शहर बनाना है।

फेस्टिवल के दूसरे दिन दोपहर को फतहसागर की पाल पर कार्यक्रम की शुरूआत सेनेगल से आए अबलेए और कॉन्सेंटिनोपल बैंड की प्रस्तुति से हुई। इस बैंड ने सेनेगल व कनाडा के लोक गीतों व मौखिक परम्पराओं को आवाज दी। उनके साज में 21 तारों के कोरा इंस्ट्रूमेंट सबके आकर्षण का केंद्र बने। कलाकारों ने कहा कि वे पहली बार भारत में प्रस्तुति दे रहे हैं। यह शहर और इसका नजारा उनके लिए अलौकिक और संगीत के लिए बहुत ही सुकून भरा है। इसके बाद कबीर कैफे बैंड की प्रस्तुति से हुई। देश के अलग-अलग हिस्सों के छह म्यूजिशियन के इस अनूठे बैंड ने 'कहत कबीर सुनो भाई साधो.., सब सांसों की सास में' , 'मोको कहा ढूंढे मैं तो तेरे पास में, ना मंदिर में ना मस्जिद में..ना काबै कैलासा में,' मन लाग्यो यार फकीरी में,' 'चदरिया झीनी झीनी, हल्के गाड़ी हांको मेरे राम, नगर में चोर आएगा..जैसे साधुक्कड़ी छंदों ने धूम मचा दी। बैंड के नीरज आर्य ने बताया कि 2006 में उन्होंने कबीर की रचनाओं को गाना शुरू किया।

इसी दिन शाम को गांधी ग्राउंड में कार्यक्रम की शुरूआत परवाज बैंड की प्रस्तुति से हुई। परवाज के खालिद अहमद ने गीटार पर धुनें छेड़ी तो मीर कासिफ इकबाल ने अपने गीटार के साथ जुगलबंदी करते हुए सुर दिए। फिडेल स्वरात्मा की रही। वासू दीक्षित, पवन कुमार, संजीव नायक, जिश्नुसादास गुप्ता, वरुण मुराली और जॉल मिलन बेपटिस्ट के इस ख्यातनाम फॉक रॉक बैंड ने संगीत को नई ऊंचाइयां दीं। अपनी एलबम मुखौटे, बरसेंगे, पत्ते सारे, आज की ताजा खबर, दूर किनारा की प्रस्तुतियों में संगीत के उतार-चढ़ाव की फनकारी देखते ही बनी।

फेस्टिवल के तीसरे दिवस पर इटली, भारत और यूके की प्रस्तुतियों ने दर्शकों का मन मोह लिया। दिल्ली के आठ युवाओं के इंडियन क्लासिकल फ्यूजन बैण्ड अद्वेता ने कॉक स्टूडियो के प्रसिद्ध गीत 'घिर-घिर आए बदरिया कारी..में राग मल्हार के साथ क्लासिकल मिक्स फ्यूजन ने कमाल कर दिया। इससे पूर्व ब्राजील के गाने अफ्रीकी -क्यूबाई लय व स्वीस क्यूबा की जाज़ संगीतकार यीलीयन केनीलजरेज़ की प्रस्तुति रही। जैज क्लासिकल, फ्यूजन और स्पेनिश बंदिशों में यीलीयन ने वूमन फ्रीडम का संदेश गाया।

गांधी ग्राउण्ड पर समापन की शाम कई विश्व संगीत सितारों के नाम रही। इसमें वेलेंटाइन की मस्ती भी देखने को मिली तो माटी की खुशबू भी। शुरुआत डिसूजा ने बास पर रिद्म दी तो सचिन बनंदूर ने ड्रम व परकशन पर संगीत को नई ऊंचाइयां दीं। इसके बाद दूसरी प्रस्तुति में दक्षिणी अफ्रीका के हॉट वाटर बैंड ने वहां के फॉक को साकार कर दिया। अपलिफ्टिंग डांस की अदा और गाते हुए इंटरेक्शन ने जादू जगाया। सुरों में देहाती रंग भी मिले तो अपनों से बिछड़ने वालों के सुर भी। तीसरी प्रस्तुति इटली के बैण्ड आफी सीना की मंत्रमुग्ध कर देने वाली प्रस्तुति के साथ हुई। सिनीजिया मारजो ने वोकल, फ्ल्यूट व परकशन पर, डोंटेलो पिजानेला ने मेंडोला पर, जॉज्यिो डोवेरी वायलिन पर, ल्यूगी पेनिका ने गीटार, सिलिविया गैलोन ने वोकल व परकशन पर साथ दिया। उनके संगीत ने म्यूजिकल थैरीपी का जादू जगाया। उन्होंने ट्रांस कंटेपरेरी म्यूजिक, लिरिक्स को परम्परागत और मौलिक गीतों में पिरोया।

दूसरी प्रस्तुति में भारतीय गीटार संगीत सितारे ध्रुव घाड़ेकर के नये

प्रोजेक्ट ध्रुव वॉयज़ की प्रस्तुतियों ने दिलों के तारों को झंकृत कर दिया। उन्होंने अपने हिट नंबर थोड़ी देर उड़ जा को असमी कलाकार के साथ प्रस्तुत किया। साथ ही बाम्बे बॉयज, द्रोणा, व्हाइट नॉइज के गीतों के तार छेड़े तो मानों मन की गांठें खोल कर रख दीं। इसके बाद लंदन से आए गिरजाघर के कलाकार फ्यूजन ऑफ गोसपेल विद फंक, जैज एंड रैगे ने रेवरेंड ब्रेजिल मेडे, लॉरैन जॉनसन, डेलरॉय पॉवेल और जॉन फेंसिस सहित साथियों के साथ सुर मिलाए तो माहौल रुहानी हो गया।

इस फेस्टिवल में विभिन्न श्रेणियों के 150 से अधिक वैश्विक कलाकारों ने प्रस्तुतियां दीं। वर्ल्ड म्यूजिक फेस्टिवल डायरेक्टर सेहर के संजीव भार्गव ने कहा कि उदयपुर ने म्यूजिक फेस्टिवल के माध्यम से विश्व में नई पहचान बनाई है। यह सिलसिला निरंतर रहेगा। अगले बरस फिर आएंगे और वह भी संगीत की खुशबू के साथ।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, टाईटल रजि. RAJHIN17670, Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।